CHILDREN'S BOOK TRUST NEW DELHI
सी बी टी प्रकाशन

साम्राज्य हिला चुटकीभर नमक से



साम्राज्य हिला चुटकीभर नमक से

लेखिका : सरोजिनी सिन्हा
चित्रांकन : मृणाल मित्र
अनुवाद : मनमोहिनी पुरी

चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित सन् 1982 की बाल-साहित्य लेखन प्रतियोगिता में अंग्रेजी की पुस्तक 'ए पिंच ऑफ सॉल्ट रॉक्स एन् एम्पायर' को अकथा साहित्य वर्ग में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। 'साम्राज्य हिला चुटकीभर नमक से' इसी अंग्रेजी पुस्तक का हिन्दी रूपान्तर है।

श्रीमती सरोजिनी सिन्हा की एक अन्य अंग्रेजी पुस्तक 'द ट्रेजर बॉक्स' को भी पुरस्कार मिल चुका है जिसका हिन्दी रूपान्तर 'आहूति' है।

आभारोक्ति

इस पुस्तक में संयोजित चित्रावलि 'गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति' (शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार) से प्राप्त सन्दर्भ चित्रों पर आधारित है। प्रकाशक इस सहयोग के लिये उनके आभारी हैं।

SAMRAJYA HILA CHUTKI BHAR NAMAK SE

पुनर्मुद्रण 1990, 1992, 1993, 1998, 2001.

ISBN 81-7011-309-1

चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित एवं न्यास के इंद्रप्रस्थ प्रेस, नेहरू हाउस,
4 बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली में मुद्रित।

साम्राज्य हिला चुटकीभर नमक से

उन्हें चलते हुए तीन सप्ताह से अधिक हो गये थे। प्रतिदिन वे सूखे सपाट ग्रामीण इलाके से गुज़रते थे। गर्मी की तेज़ धूप ने यहां की हरियाली को ललछौंहा और धूलभरा बना दिया था। और अब वे डांडी गांव में समुद्र के किनारे खड़े थे। अरब सागर की लहरें उमड़ती हरहराती आतीं और तट को छू कर पीछे हट जातीं।

ये 'कानून तोड़ने' वाले लोग थे और उस कानून को तोड़ने आये थे जो उन्हें नमक बनाने और समुद्र द्वारा छोड़े नमक को उठाने तक से रोकता था।

मोहनदास करमचन्द गाँधी उनके नेता थे। पूरा भारत उन्हें गाँधीजी या महात्मा गाँधी के नाम से जानता था। डांडी मार्च उसी आन्दोलन का भाग था जिसे गाँधीजी सत्याग्रह अथवा सत्य की खोज कहते थे।

चौबीस वर्ष पहले जब वह दक्षिण अफ्रीका में रह रहे थे, उनके सत्याग्रह ने सरकार को वह कानून रद्द करने पर विवश कर दिया था जिसके अधीन ट्रान्सवाल में रहने वाले सारे भारतीय पुरुष, स्त्री और बच्चों को अपने नाम की रजिस्ट्री करवानी पड़ती थी और हर व्यक्ति को प्रमाणपत्र लेकर चलना पड़ता था जिसमें उसका नाम लिखा होता था और अंगूठे व उगलियों के निशान रहते थे। ऐसा प्रमाण पत्र उन्हें हर समय अपने पास यह प्रमाणित करने के लिये रखना पड़ता था कि वे इस देश में रहने के अधिकारी हैं।

भारत में भी वह उसी रास्ते पर चल रहे थे। उन्होंने बिलकुल

शान्त और अहिंसात्मक तरीके से विदेशी गोरी सरकार की सत्ता को चुनौती दी थी और वह सरकार के साथ असहयोग की नीति अपना रहे थे।

ब्रिटिश लोग भारत में 330 वर्ष पहले आये थे। वे सूरत बन्दरगाह पर उतरे थे जो डांडी से करीब 50 किलोमीटर दूर है, जहां पर आज अर्थात, पांच अप्रैल सन् 1930 को गाँधीजी एवं उनके अनुयायी अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष आरम्भ करने के लिये खड़े थे।

अंग्रेज व्यापार के लिये आये थे और फिर शासन करने के लिये रुक गये। लन्दन में सन् 1599 में ईस्ट इंडिया कम्पनी का गठन पूर्व से व्यापार करने के लिए किया गया था। सन् 1600 में कप्तान हाकिन्स की कप्तानी में एक छोटा सा जहाज भेजा गया जिसने सूरत में लंगर डाला। वहां से कुछ वर्ष बाद अंग्रेज मुगल सम्राट जहांगीर के दरबार में आगरा उपस्थित हुए। सम्राट ने हाकिन्स का स्वागत किया और ईस्ट इंडिया कम्पनी को भारत में व्यापार करने की अनुमति दे दी और यह अधिकार भी दिया कि वे बम्बई के उत्तर में अपने डिपो भी बना सकते हैं।

व्यापार में बहुत लाभ हुआ और कम्पनी खूब पनपी। अठारहवीं शताब्दी में जब मुगल साम्राज्य कमज़ोर होकर टूटने लगा तो कम्पनी ने स्थानीय राजनीति में हस्तक्षेप शुरू कर दिया और जल्दी ही बहुत शक्तिशाली हो गई। उन्नीसवीं शताब्दी का आरम्भ होते-होते अंग्रेज भारत के एक बड़े भाग पर शासन कर रहे थे। आरम्भ से ही भारतवासी उनके शासन का विरोध करने लगे थे। सन् 1857 में अंग्रेजों के विरुद्ध एक सशस्त्र क्रांति हुई जिसे बड़ी निष्ठुरता से दबा दिया गया। तब ब्रिटिश सरकार ने ईस्ट इंडिया कम्पनी को विघटित करके भारत के शासन की बागडोर अपने हाथों में ले ली।

यद्यपि भारत निवासी विदेशी शासन नहीं चाहते थे लेकिन प्रथम महायुद्ध के समय गाँधीजी और अन्य नेता अंग्रेजों के प्रति वफादार रहे। उनका विचार था कि युद्ध के उपरान्त अंग्रेज सरकार उनकी स्वतन्त्रता की मांग को सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से देखेगी। उसके विपरीत जब प्रथम महायुद्ध समाप्त हो गया, तो अंग्रेजों ने स्वतन्त्रता आन्दोलन को दबाने का भरसक प्रयत्न किया। इसके विरोध में

गाँधीजी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने देश भर में 6 अप्रैल 1919 को हड़ताल करवाने का निश्चय किया। सारे भारत में दुकानें बन्द रहीं, लोग काम पर नहीं गये, कारखाने बन्द रहे एवं स्कूलों में कक्षाएं तक खाली रहीं।

13 अप्रैल, 1919 को जलसे-जलूसों पर प्रतिबन्ध लगा होने के बावजूद जलियांवाला बाग, अमृतसर, में सभा हुई। उसमें काफी भीड़ थी। स्थिति पर नियंत्रण के लिये सेना बुलाई गई और जनरल डायर ने भीड़ को सबक सिखाने के लिये फायरिंग का आदेश दिया। सैकड़ों निर्दोष लोग मारे गये और घायल हुए।

पूरा देश इस अत्याचार से उबल पड़ा। गाँधी जी ने देश भर में असहयोग और सविनय अवज्ञा आन्दोलन का आरम्भ किया। उन्होंने सरकारी संस्थाओं और विदेशी कपड़े का बहिष्कार करने का निश्चय किया। उन्होंने लोगों से चर्खे से कते सूत की बनी मोटी खादी पहनने को कहा।

इससे न सिर्फ ब्रिटेन की आर्थिक व्यवस्था की जड़ें हिल जातीं—क्योंकि ब्रिटेन में बने कपड़े के लिये भारत एक बड़ी मंडी था जिससे उन्हें बड़ा लाभ होता था—बल्कि देहात के बहुत से गरीब लोगों को रोजगार भी मिलता।

गाँधीजी ने भारत भर के गांवों, कस्बों और बड़े शहरों की यात्रा की। प्रत्येक स्थान पर उनके दर्शनों के लिये व उन्हें सुनने के लिये भीड़ इकट्ठी हो जाती। उनकी सादगी, त्याग और सन्त जैसा जीवन ऐसा था कि लोग उनको प्यार करने लगे, एवं प्रशंसा और सम्मान की दृष्टि से देखने लगे थे।

उन्होंने लोगों से कहा कि यदि भारत को स्वराज्य लेना है तो उन्हें विदेशी कपड़े का बहिष्कार करना होगा। हर सभा में गाँधीजी लोगों से विदेशी कपड़े से बनी चीज़ें उतारने को कहते और जब उनका ढेर लग जाता तो उनकी होली जलाई जाती। बहुत से लोग उनका आदेश मानकर अपनी कमीजें, पतलून, टाई इत्यादि उतार के उनके चरणों में फेंक देते और फिर उस ढेर को आग लगा देते।

बहुत ही उत्तेजना के दिन थे वे। सारे भारत में विदेशी कपड़ों की





जलूस को तितर-बितर करती पुलिस

होली जलाई जा रही थी और लोगों ने खादी पहनने की सौगन्ध खाई थी। हजारों लोगों को गिरफ़ार किया गया। जुलूस और सभाओं को बल प्रयोग से भंग किया गया। लेकिन सभी सत्याग्रहियों ने तो अहिसंक सविनय अवज्ञा और असहयोग का पाठ पढ़ा नहीं था, इसलिये कई स्थानों पर हिंसा भी फूट पड़ी। गाँधी जी ने तत्काल आन्दोलन रोक दिया क्योंकि उनके लिये अहिंसा सबसे महत्वपूर्ण थी।

इसके तुरन्त बाद ही उन्हें गिरफ़ार कर लिया गया और 6 वर्ष की साधारण कैद हुई। लेकिन कैद का समय समाप्त होने से पहले ही गाँधीजी को खराब स्वास्थ्य के कारण छोड़ दिया गया। जेल में गाँधीजी को समय मिला कि वह भविष्य का कार्यक्रम बना सकें। उन्होंने अनुभव किया कि स्वतंत्रता का लाभ देश को तभी हो सकता है जब दरिद्रता और सामाजिक बुराइयों को जड़ से मिटा दिया जाए।

उन्होंने ऐसा कार्यक्रम बनाया जिससे गांवों की अर्थ व्यवस्था का पुनर्निर्माण किया जा सके। और सबको रोजगार मिल जाये। इसके लिये उन्होंने आवश्यक समझा कि गांवों में हाथ से कताई और बुनाई का चलन हो। वह छुआछूत और जातिवाद को समाप्त करना चाहते थे। वह यह भी चाहते थे कि महिलाओं की असमर्थताओं को दूर किया जाये। बाल-विवाह जैसी सामाजिक कुरीतियों को खत्म किया जाये एवं अस्वास्थ्यकर स्थितियों को सुधारा जाए।

उन्होंने यह भी अनुभव किया कि अंग्रेज धर्म के नाम पर भारतवासियों को एक दूसरे से अलग करने की कुचालें चल रहे हैं। इसलिये उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बल दिया और उसके लिये काम करने का निश्चय किया।

गाँधीजी इन सुधारों में व्यस्त हो गये थे, दूसरी ओर जवाहर लाल नेहरू जैसे युवा नेताओं को स्वाधीनता की ओर ले जानी वाली प्रगति बहुत धीमी लग रही थी। गाँधीजी भी उनसे सहमत थे और बोले, 'अगर भारत को 31 दिसम्बर, 1929 तक उपनिवेश का दर्जा नहीं मिल जाता तो मैं घोषणा कर दूंगा कि मैं स्वाधीनता का पक्षधर हूं'।

उपनिवेश स्थिति का अर्थ होता भारत को आस्ट्रेलिया और

कनाडा की तरह स्वायत्त शासन मिलना और ब्रिटेन से भी उसके संबंध बने रहना।

यद्यपि भारत की स्वाधीनता के लिये लड़ रही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में गाँधीजी किसी पद पर नहीं थे, फिर भी पार्टी के नेता उनसे परामर्श किये बिना कोई कदम नहीं उठाते थे।

31 दिसम्बर, 1929 को कांग्रेस ने घोषणा की कि उपनिवेश का दर्जा ही काफी नहीं है उन्हें तो पूर्ण स्वराज्य चाहिये। उन्होंने तय किया कि 26 जनवरी का दिन 'पूर्ण स्वराज दिवस' के रूप में मनाया जायेगा।

26 जनवरी, 1930 को सारे देश में बड़ी-बड़ी जनसभायें हुई और उनमें गाँधीजी का प्रस्ताव पढ़ा गया। उसमें कहा गया थाः

'हम मानते हैं कि अन्य सबकी तरह भारतवासियों का भी अधिकार है कि वे स्वतंत्र हों और अपने परिश्रम के फल का आनन्द लें और जीवन की आवश्यक वस्तुयें उन्हें मिलें। हम यह मानते हैं कि स्वतंत्रता पाने का सबसे अधिक सार्थक साधन हिंसा नहीं है। इसलिये उसकी तैयारी के लिये हम ब्रिटिश सरकार से सब संबंध तोड़ देंगे और सविनय अवज्ञा व असहयोग आन्दोलन करेंगे जिसमें कर न देना भी शामिल होगा। हमें पूर्ण विश्वास है कि यदि हम सरकार को अपनी स्वैच्छिक सहायता और कर देना बन्द कर दें और भड़काने के बावजूद भी हिंसा का मार्ग न अपनायें तो इस अमानुषिक शासन का अन्त निश्चित है'।

गाँधीजी अहमदाबाद के निकट साबरमती नदी के किनारे स्थित अपने आश्रम में रहने लगे और भारत को स्वाधीन कराने के अभियान का आयोजन करने लगे। वह समझते थे और हर कोई जानता था कि सविनय अवज्ञा और असहयोग आन्दोलन की अगुआई वही करेंगे। वह चाहते थे कि लोग सरकार के विरुद्ध उठ खड़े हों लेकिन अहिंसक रह कर। यह सरल नहीं था। लोग अंग्रेज सरकार से तंग आ चुके थे और वातावरण में हिंसा की चिनगारियां छिटक रही थीं। एक क्रान्तिकारी ने उस रेलगाड़ी के नीचे बम फोड़ दिया जिसमें वाइसराय लार्ड अर्विन दिल्ली लौट रहे थे। वाइसराय

को चोट तो नहीं लगी मगर इससे स्पष्ट हो गया कि लोग किस मूड में हैं। गाँधीजी ने इस आक्रमण की निन्दा की और लोगों से कहा कि अहिंसा के मार्ग पर चलें और उनके रचनात्मक कार्यक्रम का अनुगमन करें।

विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर साबरमती आश्रम में गाँधीजी से मिले। उन्होंने गाँधीजी से पूछा कि वह देश के लिये क्या योजना बना रहे हैं? गाँधीजी ने केवल इतना कहा, 'मैं दिन रात सोच रहा हूं लेकिन गहन अन्धकार में प्रकाश की कोई किरण फूटती नहीं दिखाई दे रही।'

उन्हें किसी ऐसे मुद्दे की खोज थी जिससे इस विदेशी सरकार की बुराइयां और अन्याय स्पष्ट हो जायें और पूरा देश जाग उठे।

वह छः सप्ताह तक सोचते रहे। तब उन्हें अपनी अन्तरात्मा की आवाज़ सुनाई दी जिसने उनको नमक कानून तोड़ने के लिये कहा।

यह एक विलक्षण योजना थी। गाँधीजी ने कुछ वर्ष पहले नमक खाना छोड़ दिया था। इसलिये यह चीज़ उनके स्वयं के लिये कोई महत्व नहीं रखती थी। लेकिन इसे स्वतंत्रता संग्राम का आधार बना कर उन्होंने केवल अपने देशवासियों के लिये ही नहीं बल्कि अन्य सभी देशों के लोगों के सामने स्पष्ट कर दिया कि उनका उद्देश्य कितना न्यायसंगत था और ब्रिटिश शासन कितना अन्यायी था।

लेकिन वाइसराय ने 'चुटकी भर नमक से सरकार का तख्ता पलटने की मिस्टर गांधी की पागल योजना' का मज़ाक उड़ाया।

नमक कानून ने सभी भारतवासियों को चाहे वे गरीब हों या अमीर, वृद्ध हों या युवा, शिक्षित हों या अनपढ़ प्रभावित किया था।

सन् 1835 में एक आयोग ने सिफारिश की थी कि भारत में बना नमक भारत में बेचा जा सकता है। नमक कानून के अनुसार नमक बनाने का एकाधिकार केवल सरकार को था। अन्य कोई भी नमक नहीं बना सकता था। यदि कोई व्यक्ति नमक बनाये तो सरकार नमक जब्त कर सकती थी और उसे छह महीने की सजा दे सकती थी। नमक की कीमत के ऊपर 2400 प्रतिशत कर भी लगा दिया गया था।

अपने साप्ताहिक पत्र 'यंग इंडिया' में लिखते हुए गाँधीजी ने इस अन्याय की ओर संकेत किया। 'पानी के बाद नमक ही एक ऐसी चीज़ है जिस पर कर लगा कर सरकार लाखों भूखे, बीमार और असहाय लोगों तक पहुंच सकती है...नमक एकाधिकार का परिणाम है विनाश—अर्थात उन हजारों स्थानों का बन्द होना जहां हजारों लोग अपने लिए नमक बनाते थे। वह सरकार गैर कानूनी है जो लोगों का नमक छीन कर, उस पर कर लगा कर फिर महंगी कीमत पर बेचती है। लोगों को पूरा अधिकार है कि जो उनका अपना है उसे वे ले लें।' ।

ब्रिटेन और भारत में बहुत से निष्पक्ष अंग्रेज जानते थे कि नमक कानून न्याय संगत नहीं है। रामजे मैकडोनल्ड ने प्रधानमंत्री बनने से पहले नमक कानून की निन्दा की थी। इसी कानून का उल्लंघन कर के गाँधीजी ने भारत की स्वाधीनता पाने की इच्छा को दुनिया के सामने व्यक्त किया। जल्दी ही सब इस बारे में बातें करने लगे थे।

गाँधीजी ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की कार्यकारिणी समिति से सहमति ले ली थी कि नमक सत्याग्रह आरम्भ किया जाए। इस का नियंत्रण और निर्देशन वही लोग करेंगे जो अहिंसा में विश्वास रखते हैं। उन्होंने कहा, 'मेरी आशा का आधार सत्य और अहिंसा ही हो सकता है। मुझे विश्वास है कि जब कोई अन्य तरीका काम नहीं करेगा तो इन सिद्धान्तों की विजय होगी।'

योजना यह थी कि गाँधीजी किसी स्थान पर जाकर नमक उठायेंगे और इस तरह नमक कानून तोड़ देंगे। वह अपने साथ साबरमती आश्रम से कुछ गिने-चुने लोग साथ ले जाने वाले थे। बाकी सब लोगों को गाँधीजी द्वारा नमक कानून तोड़ने की प्रतीक्षा करनी थी। उनका विचार था कि इसके बाद यह आन्दोलन फैलेगा।

उन्होंने कहा, 'हम विजय प्राप्त करेंगे या मिट जायेंगे। यदि हम मिट गये तो यह बात साम्राज्य की नींव हिला देगी। यदि लोग पूछें कि अगर सरकार ने बम बरसाये तो क्या होगा, उसका उत्तर है, 'यदि निर्दोष आदमी, औरतें एवं बच्चे नष्ट होकर राख हो जाते हैं तो उस राख में से ऐसी आग भड़केगी जो सारे साम्राज्य को राख कर देगी।'

दक्षिण अफ्रीका से लौटकर गाँधीजी ने सन् 1915 में साबरमती के तट पर सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की थी। आरम्भ में आश्रम में केवल पच्चीस सदस्य थे और वे सब संयुक्त परिवार की तरह रहते थे। गाँधीजी ने इसे अपने सामाजिक प्रयोगों के लिये परीक्षणशाला और ऐसा स्थान बनाया जहां पर देश की सेवा के लिये स्वयंसेवक प्रशिक्षित किये जाते थे।

आरम्भ से ही वह अछूतों को, जिन्हें उन्होंने हरिजन नाम दिया था, आश्रम में ले लेते थे। उन्होंने शुरू से ही यह स्पष्ट कर दिया था कि वह छुआछूत की सामाजिक बुराई को कभी सहन नहीं करेंगे। सबका भोजन एक ही रसोईघर में बनता था और शौचालय तक सब स्वयं साफ करते थे—यह काम केवल हरिजनों के सुपुर्द नहीं था। उसी तरह सब आश्रमवासियों के लिये चर्खा कातना भी आवश्यक था।

गाँधीजी ने इस आश्रम का नाम सत्याग्रह आश्रम रखा था क्योंकि

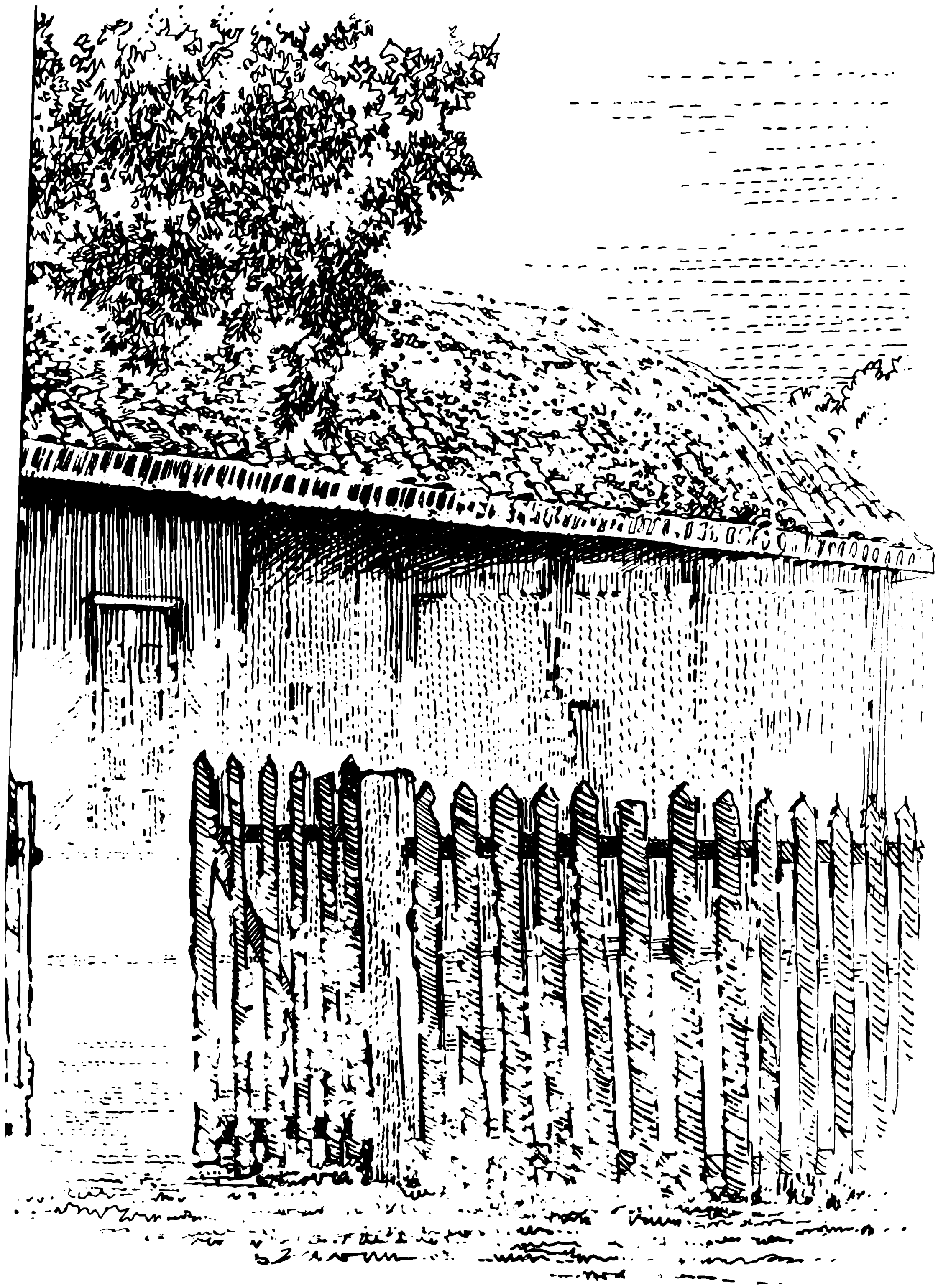
वह सत्याग्रह का वही तरीका जिसके द्वारा दक्षिण अफ्रीका में उन्हें बहुत सफलता मिली थी, यहां भी उपयोग में लाना चाहते थे। क्योंकि गाँधीजी आश्रम-वासियों के साथ ही रहते थे इसलिए सब अहिंसा और सत्याग्रह के बारे में उनके विचारों से भली भांति परिचित थे। इसलिये गाँधीजी ने निर्णय लिया कि जब वह नमक कानून का उल्लंघन करने जायेंगे तो उनके साथ केवल आश्रमवासी ही रहेंगे।

नमक सत्याग्रह आरम्भ करने से पहले गाँधीजी ने वाइसराय लार्ड अर्विन को एक पत्र लिखा। इसमें उन्होंने वाइसराय को 'प्रिय मित्र' कह कर सम्बोधित किया और लिखाः 'असहयोग एवं सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरु करने से पहले, जो खतरा लेने से मैं इतने वर्ष डरता रहा हूं मैं आपको कोई अन्य उपाय खोजने के लिए लिख रहा हूं। मेरा स्वयं का विश्वास बिलकुल स्पष्ट है। मैं जानबूझकर किसी जीवित प्राणी को चोट नहीं पहुंचा सकता, फिर इन्सानों की तो बात ही क्या, चाहे वे मुझे और मेरों को कितनी हानि क्यों न पहुंचायें। यद्यपि मैं भारत में अंग्रेजी शासन को शाप समझता हूं फिर भी मेरी इच्छा किसी भी अंग्रेज को हानि पहुंचाने की नहीं है...। मैं ब्रिटिश शासन को शाप क्यों समझता हूं? ब्रिटिश शासन ने सैनिक और नागरिक प्रशासन की भयंकर खर्चीली व्यवस्था को हमारे ऊपर लादा है। इसने लगातार हमारा शोषण किया है और लाखों लोगों को गूंगा और कंगाल बना दिया है।

'इसने हमें राजनैतिक रूप से खरीदे हुए गुलाम बना दिया है और हमारी संस्कृति की आधार शिला ही हिला दी है। मुझे शंका है कि निकट भविष्य में भारत को स्वतंत्र उपनिवेश बनाने का आप का कोई इरादा नहीं है।

'मैं आपके सामने कुछ महत्वपूर्ण बातें रख रहा हूं' सारी राजस्व पद्धति का सुधार करना होगा। इसका ध्येय किसान का भला होना चाहिये। ब्रिटिश तरीका ऐसा है कि यह किसान का जीवन तत्व ही चूस लेता है। जीने के लिये जो नमक उसे चाहिए उस पर भी कर लगा दिया गया है। इसका सबसे अधिक बोझ उसी पर पड़ता है।





साबरमती आश्रम

यह कर गरीब आदमी को तब और भी अधिक खलता है जब उसे यह याद आता है कि वह इस चीज़ को अमीर से अधिक खाता है। शराब और गैर कानूनी चरस-अफीम का राजस्व भी गरीबों से ही अधिक आता है।

'ऐसे अन्याय जिनके उदाहरण ऊपर दिये गये हैं, हर समय किये जाते हैं जिससे दुनिया में सबसे महंगा विदेशी प्रशासन चलता रहे। आप अपने वेतन को ही देखिए जो 21,000 रुपये मासिक है। ब्रिटिश प्रधान मंत्री को 5000 पाऊंड वार्षिक मिलते हैं अर्थात 5,400 रुपये मासिक। आपको 700 रुपये प्रतिदिन मिलते हैं जबकि एक भारतीय की औसतन आय दो आना प्रतिदिन से भी कम है। ब्रिटिश प्रधान मंत्री को 180 रुपये प्रतिदिन मिलते हैं जबकि एक ब्रिटेनवासी की प्रतिदिन की औसत आय दो रुपये है। इस तरह आप की आय एक भारतीय की औसत आय से पांच हजार गुना अधिक है। अंग्रेज प्रधान मंत्री की आय एक अंग्रेज की औसतन आय से केवल नब्बे गुना अधिक है। मैं घुटने टेक कर कहता हूं कि आप इस बात पर गौर करें।

'जो बात वाइसराय के वेतन के लिये सच है वह सारे प्रशासन के खर्च के लिये भी सच है। राजस्व में कमी करने का अर्थ है प्रशासन के खर्च में कमी—यह कमी मूलभूत सुधार लाकर की जाये।

'यदि भारत को एक राष्ट्र की तरह जीवित रहना है और यहां के लोगों का भूख से धीरे-धीरे मरना बन्द होना है तो कोई ऐसा उपाय ढूंढ़ना होगा जिससे उन्हें तत्काल राहत मिले।

'मेरे भीतर यह विश्वास जड़ पकड़ता जा रहा है कि केवल अहिंसा ही अंग्रेजी सरकार की संगठित हिंसा को रोक सकती है। यह अहिंसा हम असहयोग आन्दोलन द्वारा प्रकट करेंगे। अभी यह आन्दोलन साबरमती आश्रम के सदस्यों तक ही सीमित होगा लेकिन अंततः यह आन्दोलन जनता का आन्दोलन बनकर रहेगा और इस में जो चाहे शामिल हो सकेगा।

'यदि मेरे इस पत्र ने आपके मर्मस्थल को न छूआ तो मेरी महत्वाकांक्षा यह है कि अंग्रेज लोगों को अहिंसा से बदल दूं और

उन्हें दिखाऊं कि वे भारत के प्रति कितना बड़ा अन्याय कर रहे हैं।

'यदि आपने मेरे पत्र के उत्तर में इस महीने की 19 तारीख तक कोई प्रतिक्रिया न दिखाई तो मैं अपने आश्रम के साथियों के साथ आगे बढ़कर नमक कानून का उल्लंघन करूंगा। मैं गरीब आदमी के दृष्टिकोण से इस कर को सबसे ज्यादा अन्यायपूर्ण समझता हूं। स्वतंत्रता आन्दोलन इस देश के सबसे गरीब आदमी के लिये है सो मैं उसका आरम्भ इस बुराई से ही करूंगा। आश्चर्य यह है कि हमने इस क्रूर एकाधिकार को इतने दिन तक पनपने दिया। मैं जानता हूं कि यह आपके हाथ में हैं कि आप मुझे गिरफ़्तार करके इस योजना को पूरी न होने दें। लेकिन मुझे आशा है कि मेरे बाद हजारों-लाखों लोग अनुशासित तरीके से इस काम को पूरा करने के लिये आगे बढ़ेगें...

'यह पत्र धमकी के रूप में नहीं लिखा गया है बल्कि यह एक सत्याग्रही का सामान्य और पवित्र कर्त्तव्य है। इसलिये मैं इसको एक युवा अंग्रेज मित्र द्वारा, जो हमारे सत्याग्रह और अहिंसा की सत्यता में विश्वास करता है, भिजवा रहा हूं।'

सदा आपका सच्चा दोस्त
एम.के.गांधी

यह पत्र लेकर जाने वाला युवा अंग्रेज रेजिनल्ड रेनाल्ड्स था जो इस समय साबरमती आश्रम में रह रहा था। खादी के कपड़े पहने और अपना सिर हैलमेट से ढके हुए (अंग्रेज होने के कारण उसे सूर्य की गरमी बहुत सताती थी) वह वाइसराय के यहां पत्र देने गया।

वाइसराय मेरठ से दिल्ली आया ही था। उसने पत्र का कोई उत्तर नहीं दिया। इसके बदले उसके सचिव ने लिखा 'महामना... को यह जान कर खेद हुआ कि आप ऐसा रास्ता अपना रहे हैं जिससे स्पष्ट तौर पर कानून का उल्लंघन और जन शान्ति को खतरा होगा।'

इस उत्तर से गाँधीजी उदास हो गये। उन्होंने लिखा 'मैने घुटने टेक कर रोटी मांगी मगर मुझे पत्थर मिला। अंग्रेज जाति केवल शक्ति से ही डरती और उसके उत्तर में प्रतिक्रिया करना जानती है।

इसलिये वाइसराय का पत्र पाकर मुझे विशेष आश्चर्य नहीं हुआ। इस राष्ट्र की जनता केवल कारागार की शान्ति जानती है। मैं इस कानून का विरोध करता हूं। मैं इसे अपना पवित्र कर्त्तव्य मानता हूं कि इस अनिवार्य शान्ति को जो हमारी कौम का गला घोट रही है, को तोड़ना ही ठीक है।'

लार्ड अर्विन ने गाँधीजी को मिलने से इंकार कर दिया। लेकिन उसने गाँधीजी की गिरफ़्तारी का भी आदेश नहीं दिया। गाँधीजी ने टिप्पणी की, 'सरकार परेशान और उलझन में है'।



गाँधीजी सविनय अवज्ञा आन्दोलन की तैयारी करने लगे। और जैसे-जैसे 11 मार्च निकट आने लगी भारत उत्तेजना से आंदोलित हो उठा।

गाँधीजी ने समझाया कि सत्याग्रह से उनका मतलब क्या है और सत्याग्रही को क्या करना होगा। एक सत्याग्रही सब मनुष्यों को अपना भाई मानता है। उसे यह विश्वास होता है कि प्रेम और स्वयं आत्म पीड़न से मेरे प्रतिपक्षी के ह्रदय में भी परिवर्तन अवश्य होगा। उसे यह पूर्ण विश्वास होता है कि प्रेम की शक्ति इतनी महान है कि वह कड़े से कड़े पत्थर दिल को भी पिघला देती है।

सत्याग्रह शांति का मार्ग है और किसी के दिल में वैसी कड़वाहट उत्पन्न नहीं करता जैसी कि हिंसा।

गाँधीजी ने कहा कि कायरता और प्रेम वैसे ही साथ-साथ नहीं रहते जैसे जल और अग्नि। एक सत्याग्रही में इतना साहस और प्रेम होना चाहिये कि वह हिंसा का सामना कर सके और फिर भी अपने प्रतिपक्षी से प्रेम करे और उसके हृदय-परिवर्तन का प्रयत्न करे। सत्याग्रही का भय रहित होना और सत्य में अटल विश्वास उसको इतना साहस देता है कि वह किसी भी बुराई को ललकार सकता है चाहे उसके रास्ते में कितनी ही बाधायें क्यों न हों। सत्याग्रही अपने प्रतिपक्षी की सहज बुद्धि एवं नैतिकता को शब्दों, पवित्रता, विनय, ईमानदारी और आत्म पीड़न द्वारा प्रभावित करता है।

गाँधीजी का विश्वास था कि ध्येय और साधन दोनों में ही पवित्रता होनी चाहिये। इस विचार के आधार पर गाँधीजी ने यंग इंडिया में सत्याग्रहियों

के लिये नियम प्रकाशित किये। इनमें से कुछ नीचे दिये जाते हैं :

1. सत्याग्रही, जो असैनिक प्रतिरोधी है, प्रतिपक्षी के प्रति गुस्सा नहीं करेगा।
2. वह प्रतिपक्षी के गुस्से का सामना अहिंसा से करेगा।
3. वह अपने प्रतिपक्षी के हमले को सहेगा और पलटकर हमला नहीं करेगा।
4. जब कोई अधिकारी उसे गिरफ़्तार करना चाहेगा तो वह गिरफ़्तार हो जायेगा।
5. असैनिक प्रतिरोधी अपने प्रतिपक्षी का अपमान भी नहीं करेगा।
6. असैनिक प्रतिरोधी यूनियन जैक को सलाम नहीं करेगा और न ही उसका अपमान करेगा।
7. आन्दोलन के दौरान यदि कोई अन्य व्यक्ति किसी सरकारी अधिकारी का अपमान या उस पर हमला करता है तो सत्याग्रही को उसे बचाना होगा।

गाँधीजी ने उन सत्याग्रहियों के लिए भी आचार संहिता बना दी जिन्हें गिरफ़्तार करके जेल भेज दिया गया था। कैदी के तौर पर एक सत्याग्रही जेल के अधिकारियों के साथ शिष्ट बर्ताव करेगा और जेल के अनुशासन को मानेगा। सत्याग्रही अन्य साधारण कैदियों से स्वयं को ऊंचा नहीं समझेगा और न ही अपने प्रति विशेष बर्ताव की मांग करेगा। उसे जेल का भोजन, यदि सफाई से बना हो और साफ बर्तनों में परोसा जाये तो खाना होगा, यदि भोजन गन्दे बर्तनों में और गाली-गलौज के साथ दिया जाये तो सत्याग्रही उसे खाने से मना कर देगा।

जेल जाने पर या किसी तरह अपना जीवन गंवाने पर सत्याग्रही को अपने परिवार के लिये भरण-भत्ते की आशा नहीं करनी चाहिये। सत्याग्रही साम्प्रदायिक दंगों में कभी नहीं उलझेगा। ऐसे झगड़े के समय वह किसी का पक्ष नहीं लेगा और न्याय की बात करेगा।



यंग इंडिया में नमक कानून तोड़ने के लिये मिल सकने वाले दंड के बारे में बताया गया था जिससे सत्याग्रही को पता लगे कि उसे कैसा दण्ड मिलेगा।

महात्मा गाँधीजी ने स्वयं के लिये बड़े उच्च आचार-विचार का स्तर रखा था और आशा की थी कि उनके अनुयायी भी इसी लीक पर चलेंगे। वह भारत के लिये सत्ता चाहते थे जिससे जन साधारण के जीवन में सुधार किया जा सके। लेकिन उन्हें पूरा विश्वास था कि यदि सत्ता लेने के साधन गलत हों तो वह इस सत्ता और अधिकार को भी नहीं चाहते थे। इसलिये सत्याग्रही का आचरण उच्च स्तर का हो और उसे सत्य और अहिंसा में अटल विश्वास होना चाहिये।

सत्याग्रह के नाना तरीके अपनाये जा सकते थे जैसे उपवास, अहिंसा, पिकेटिंग (धरना), असहयोग, सविनय अवज्ञा और कानूनी दण्ड जिसे सत्याग्रही सहने के लिये तत्पर रहेगा। सत्याग्रही के साथ चाहे कैसा भी बर्ताव हो वह अहिंसा बरतेगा और प्रतिपक्षी के प्रति घृणा नहीं अपनायेगा।

गाँधीजी इस बात पर बल देते थे कि सब सत्याग्रही खद्दर पहनें। महात्मा गाँधी का इरादा था कि समुद्र तक पैदल जा कर वे वहां पड़ा नमक उठायें। समुद्र तट पर यह सफेद चादर की तरह फैला हुआ रहता है। यह समुद्र का उपहार था जिसे उठाना और इस्तेमाल करना आम लोगों को मना था।

नमक सत्याग्रह कहां से आरम्भ हो, उस जगह का चुनाव करने में कई दिन लगे। तीन सदस्यों की एक चयन समिति बनाई गई जिसने गुजरात के समुद्र तट पर कई स्थानों को देखा। सूरत जिले में कई जगहों पर गये और सोच विचार किया गया। फिर इस काम के लिये डांडी को, जो नवसारी के निकट है, चुना गया। इसमें एक कमी थी। इस सुदूरवर्ती गांव में पीने के पानी की कमी थी। लेकिन नवसारी के लोगों ने वायदा किया कि वे टैंकरों द्वारा वहां पीने का काफी पानी भेज देंगे। तीन सदस्यों की समिति ने इस गांव की सिफारिश सरदार पटेल से, जो स्वतन्त्रता आन्दोलन में गाँधीजी के साथी थे, की और उन्होंने गाँधीजी से इसकी मंजूरी ले ली।

इस दौरान अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी भी इस आन्दोलन के लिये तैयारी कर रही थी। स्वयंसेवकों को भरती करके उन्हें भीड़भाड़ के नियन्त्रण की शिक्षा दी जा रही थी। वे बिना शस्त्रों के प्रतिदिन परेड करते थे।

यद्यपि गाँधीजी ने मार्च की तारीख की घोषणा नहीं की थी फिर भी लोग अहमदाबाद आने लगे थे, क्योंकि वे जानते थे कि तिथि की घोषणा में अब ज्यादा देर नहीं हो सकती। सत्याग्रह का समाचार पूरे संसार में फैल चुका था। भारतीय और विदेशी संवाददाता अहमदाबाद और साबरमती आश्रम में जमा हो गये थे।

एक जनवरी, 1930 को एक विदेशी समाचार पत्र ने लिखा था, 'इंग्लैंड और भारत में यह संकट अभी आम बातचीत का विषय नहीं है—और भारत में लाखों लोग ऐसे हैं जिन्हें इस बारे में कोई जानकारी नहीं है।'

लेकिन मार्च मास आते-आते इंग्लैंड और भारत एवं बाकी दुनिया जान चुकी थी कि भारत में क्या हो रहा है।

अहमदाबाद डाकघर में पत्र और तारों का तांता लग गया। न्यूयार्क से रेवरेंड जॉन हेंस होम ने एक संदेश गाँधीजी को भेजा, 'भगवान तुम्हारी रक्षा करे'। जर्मनी से एक डाक्टर ने लिखा, 'एक साथी तीर्थयात्री आपके व आपके काम के लिये प्रत्येक सुबह और सायं प्रार्थना करता है।'

बहुत तनाव के दिन थे। सरदार पटेल बोरसद पहुंचे कि गांव वालों को महात्मा गाँधी और सत्याग्रहियों के उचित स्वागत के लिये तैयार कर सकें। उन्होंने झकझोरने वाले भाषण दिये, 'शादी-ब्याह पर समारोह मनाना छोड़ दो। जो लोग एक ताकतवर सरकार से लड़ रहे हों वे अपना समय इन चीज़ों में नष्ट नहीं कर सकते... मैं जानता हूं कि तुममें से कुछ लोगों को अपनी ज़मीनें जब्त हो जाने का डर है। लेकिन ज़ब्ती क्या है? क्या वे तुम्हारी ज़मीन अपने साथ इंग्लैंड ले जायेंगे... मैं तुम्हें निडर बनाना चाहता हूं।'

ऐसे भड़काने वाले भाषण देने के कारण सरदार पटेल को रास में गिरफ़्तार कर लिया गया। यह सुन कर अनुमानतः 75000 लोग

साबरमती के तट पर एकत्र हो गये और उन्होंने एक प्रस्ताव पारित किया, 'हम अहमदाबादवासी निश्चय करते हैं कि हम वल्लभ भाई पटेल के दिखाये मार्ग का अनुसरण करेंगे और सम्पूर्ण स्वतन्त्रता लेकर रहेंगे। अपने देश को आजाद किए बिना हम शान्ति से न बैठेंगे और न सरकार को चैन लेने देंगे।'

जब सब उत्तेजित और तनावपूर्ण स्थिति में थे, गाँधीजी अपने प्रतिदिन के कार्यक्रमों में व्यस्त थे। जैसे, चरखा कातना, पत्रों के उत्तर देना, अपनी डायरी लिखना, लोगों से मिलना, आश्रम के बच्चों के साथ खेलना एवं प्रार्थना सभायें करना।

प्रार्थना सभाओं में गीता, कुरान और बाइबिल में से पाठ किए जाते। गाँधीजी एक ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करते थे, लोग चाहे उसे किसी नाम से पुकारें या किसी तरह पूजें। वे भीड़ से 'रघुपति राघव राजा राम' भजन गाने को कहते। उसमें भी इसी बात पर बल दिया गया था। प्रार्थना सभा के बाद गाँधीजी लोगों को संबोधित करते।

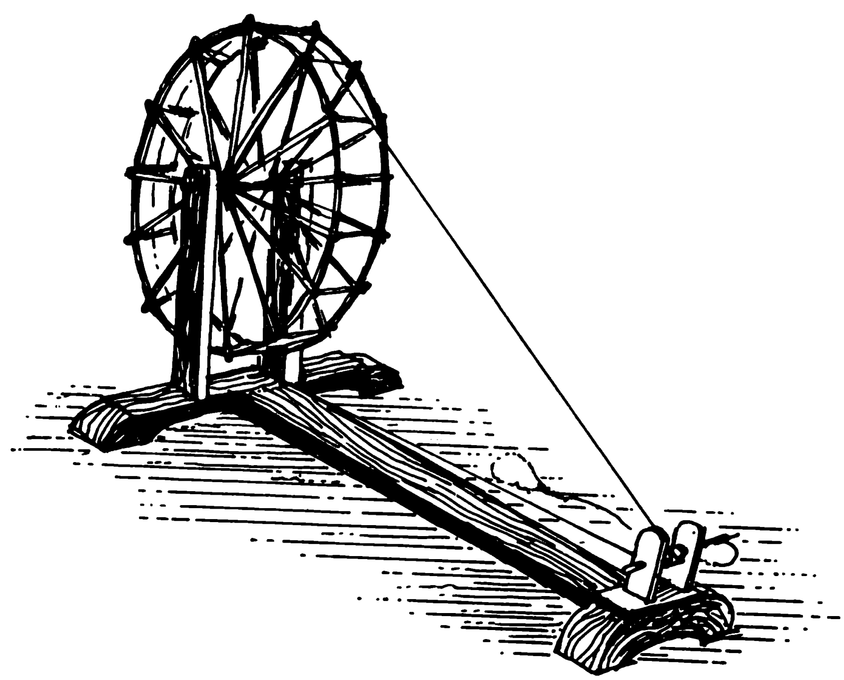
दस मार्च को गाँधीजी ने प्रार्थना सभा में डांडी मार्च की बात की। संघर्ष के अहिंसात्मक स्वरूप के बारे में बताया। कहा, 'यद्धपि लड़ाई कुछ ही दिनों में आरम्भ होने वाली है लेकिन आप सब लोग बिना डर के यहां जमा हो गये हैं। मेरे ख्याल में यदि आपको पता होता कि गोलियों और बमों का सामना करना होगा, तो क्या आप आते, क्यों? लेकिन आपको राइफल की गोलियों और बमों का भी डर नहीं है, क्यों?

'कल्पना करो यदि मैने यह घोषणा की होती कि मैं हिंसक आन्दोलन आरम्भ करने वाला हूं तो क्या सरकार मुझे अभी तक छोड़ देती। क्या आप इतिहास से ऐसा एक भी उदाहरण दिखा सकते हैं कि किसी सरकार ने अपनी सत्ता के विरुद्ध एक दिन के लिये भी खुली बगावत को सहन किया हो? लेकिन आप जानते है यहां सरकार उलझन में है। और आप यहां इसलिए आये हैं क्योंकि आप स्वयं अपनी मर्जी से जेल जाने के विचार से परिचित हो चुके हैं।'

लोग ध्यान से सुन रहे थे और गाँधीजी कहते रहे, 'मैं आपसे एक

कदम आगे जाने के लिये कहता हूं। यदि भारत के लाखों गांवों में से प्रत्येक गांव में से दस आदमी आगे आयें और नमक बनाएं और नमक कानून का उल्लंघन करें तो आपके विचार में यह सरकार क्या कर सकती है? बहुत ही क्रूर और निरंकुश तानाशाह भी शान्तिपूर्ण ढंग से विरोध करने वालों के समूहों को तोप के मुँह पर नहीं रख सकता। यदि आप केवल अपने को थोड़ा भी सक्रिय कर लें, मैं विश्वास दिलाता हूं कि हम बहुत ही थोड़े समय में इस सरकार को थका देंगे।

'मुझे आपसे पैसा नहीं चाहिये. . मैं चाहता हूं कि आप साहस से काम लें और इस आन्दोलन में शामिल हों। भगवान आपको इस आंदोलन में शामिल होने का साहस दे।'



11 मार्च 1930 को सायंकाल की प्रार्थना सभा में 10,000 लोग उपस्थित थे। गाँधीजी को लगा कि यह सुनहरा अवसर है कि आन्दोलन का आरम्भ करने की घोषणा की जाये। वह बोले, 'मुझे अपने उद्देश्य और अपने साधनों की पवित्रता में तथा उनके सही होने में पूरा विश्वास है... जब साधन न्यायपूर्ण और सही होते हैं तो, वहां भगवान अपना आशीर्वाद देने के लिए उपस्थित होते हैं... भगवान आप सब का भला करें और कल से शुरू होने वाले आन्दोलन के रास्ते से सब बाधायें दूर करें। यही हमारी प्रार्थना है।'

उन्होंने अन्त में कहा, 'शायद यह मेरा अन्तिम भाषण हो। यदि सरकार मुझे कल यात्रा करने भी देती है तो भी साबरमती के पावन तट पर यह मेरा अन्तिम भाषण होगा। और शायद यहां पर मेरे जीवन के ये अन्तिम शब्द हों।'

जब यह बात फैली कि गाँधीजी अपनी यात्रा कल सुबह आरम्भ करने वाले हैं तो उस रात ऐसा लगा मानो पूरा अहमदाबाद खाली हो गया है। करीब-करीब वहां की सारी जनता और हजारों अन्य लोग जो पूरे देश एवं विदेश से इस शहर में आये थे वे सब साबरमती आश्रम में यात्रा का आरम्भ देखने जा पहुंचे। सत्याग्रहियों को जिस मार्ग से जाना था उसके दोनों ओर लाखों लोग उनके स्वागत के लिये खड़े थे।

जैसे ही गाँधीजी की दुबली-पतली और ज़रा झुकी हुई आकृति लम्बे डंडे का सहारा लिये दिखी तो लोगों में उत्तेजना की लहर फैल गई। उनके शरीर के अनुपात में उनका सिर बड़ा लगता था। उनका

ऊपरी ओंठ मूंछों से ढका हुआ था, जिसके बाल सफेद होने लगे थे और उनके कई दांत गिर चुके थे। लेकिन उनके सौम्य चेहरे में एक विचित्र प्रकार की सुन्दरता थी। उस पर आंतरिक आत्मशक्ति और चारित्रिक दृढ़ता की छाप स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

वह सदा की तरह मोटे खद्दर की धोती पहने थे। उन्होंने लोहे के फ्रेम का चश्मा लगा रखा था और एक सस्ती घड़ी उनकी कमर से लटक रही थी। उन्होंने बहुत पहले ही यह निश्चय कर लिया था कि वह एक मिनट भी व्यर्थ नहीं जाने देंगे क्योंकि वह जानते थे कि उनके लिये समय बहुत महत्वपूर्ण है।

अठहत्तर सत्याग्रहियों में भारत के सब प्रांतों के व्यक्ति थे, यहां तक कि नेपाल के लोग भी शामिल थे, यद्यपि सबसे अधिक व्यक्ति गुजरात के ही थे। दो मुसलमान और एक ईसाई भी सत्याग्रह में सम्मिलित हुए। सत्याग्रहियों में से कुछ धनी थे और कुछ गरीब। कुछ शिक्षित थे तो कुछ अनपढ़, लेकिन उद्देश्य सबका एक ही था—वे भारत को स्वतन्त्र देखना चाहते थे। सत्याग्रहियों में गाँधी परिवार की तीन पीढ़ियां भी शामिल थीं—गाँधीजी, उनका बेटा मणिलाल और पोता कान्तिलाल।

इस यात्रा में सबसे बड़े गाँधीजी थे जिनकी उम्र इस समय 61 वर्ष की थी और सबसे छोटा सत्याग्रही अठारह वर्ष का था। सत्याग्रहियों की सूची में एक नाम अब्बास था। बड़ोदा हाई कोर्ट के अवकाश प्राप्त जज अब्बास तैयबजी जिन की उम्र इस समय 75 वर्ष से अधिक है स्मरण करते हैं कि वह यह जान कर बहुत खुश हुए थे कि वह सत्याग्रह के लिये चुने गये हैं। क्योंकि तब तक वह यही समझ रहे थे कि उनकी उपेक्षा की जा रही है। वह भाग कर गाँधीजी से मिलने पहुंचे। महात्मा हंस कर बोले, 'मेरे दोस्त, यह आप नहीं, आश्रम में रहने वाला अब्बास है, जो मेरे साथ जायेगा।'

यह सुन कर अब्बास तैयबजी उदास हो गये। लेकिन गाँधीजी ने कहा, 'निराश मत हो कि तुम सत्याग्रहियों के पहले दल में शामिल नहीं हो। तुम्हारे लिये एक और बड़े सम्मान की बात है। यदि मुझे गिरफ़्तार कर लिया गया तो तुम डांडी यात्रा का नेतृत्व करोगे।'





नवसारी में हुई एक सभा में गाँधी जी और अब्बास तैयबजी

अब्बास तैयबजी यह सुन कर बड़े खुश हुए। बाद में उन्होंने धरसना साल्ट वर्क्स पर जाने वाले सत्याग्रहियों का नेतृत्व किया और गिरफ़्तार हुए।

रत्नाजी जो अभी भी साबरमती आश्रम में रहते हैं, यह कहानी सुनाते हैं। गाँधीजी जानते थे कि सब आश्रमवासी उनके साथ डांडी मार्च पर जाने के लिये उत्सुक थे, लेकिन जब वह सत्याग्रहियों का चुनाव कर रहे थे तो उनके मन में उन सबके परिवारों की स्थिति आदि का विचार भी था। रत्नाजी एक जुलाहे थे, उनके ससुर रामजीभाई और साले हरखजी चुने गए लोगों में से थे। लेकिन जब इनका दूसरा साला भी सत्याग्रहियों में शामिल होने चला तो गाँधीजी ने कहा, 'नहीं, मैं तुम्हें नहीं ले सकता। परिवार के सब आदमियों का जाना ठीक नहीं है। तुम पीछे ठहर कर महिलाओं, बच्चों और वृद्धों की देखभाल करो।'

प्रार्थना के उपरान्त गाँधीजी और सत्याग्रहियों के दल ने भोर होते ही आश्रम छोड़ दिया। पहला रात्रि पड़ाव वहां से 20 किलोमीटर दूर था। सड़क के दोनों तरफ पूरी दूरी तक लोगों की भीड़ जमा थी। कई तो महात्मा के दर्शन करने के लिये वहां घंटों से खड़े थे।

पुलिस के सिपाही भी बड़ी संख्या में चारों ओर फैले हुए थे। लेकिन भीड़ और सत्याग्रहियों का अनुशासन ऐसा था कि गड़बड़ी का कोई खतरा ही नहीं था। गाँधीजी ने कहा, 'हम भगवान के नाम पर यह मार्च कर रहे हैं।' असलाली में उन्होंने लोगों से कहा, 'मार्च शुरू होते ही सत्याग्रहियों के पहले जत्थे ने तो अपने लौटने का रास्ता बंद कर दिया है। उन्होंने सौगंध खाई कि जब तक नमक कानून रद्द नहीं कर दिया जाता और स्वराज नहीं मिल जाता वह साबरमती आश्रम में वापस नहीं आयेंगे। उन्होंने ब्रिटिश सरकार को चुनौती दी कि उन्हें गिरफ़्तार करे।'

निकट ही के एक गांव में गाँधीजी को वहां कोई चर्खा न देखकर बहुत खेद हुआ और उन्होंने लोगों से कहा, 'यदि स्वतंत्रता लेनी है तो नींद छोड़कर उठ खड़े हों। यदि तुम नहीं उठोगे तो अंग्रेज या अन्य लोग तुम्हें लूट लेंगे।'

उस 400 किलोमीटर के मार्ग पर जिसके द्वारा सत्याग्रहियों को डांडी जाना था, दृश्य एक जैसा ही था। सड़क के दोनों ओर उत्तेजित पर अनुशासित भीड़ जो प्रत्येक गांव पर सत्याग्रहियों का स्वागत करने के लिये उनकी घंटों प्रतीक्षा करती रही थी। उन सबके लिये गाँधीजी का एक ही सन्देश था—

'विचार, शब्द एवं कार्य पवित्र होने चाहियें। चर्खा कातो और खादी पहनो। शराब छोड़ दो। सामाजिक कुरीतियों को खत्म करो। संगठित हो जाओ, शान्त रहो और अहिंसा का पालन करो एवं नमक कानून तोड़ने के लिये तैयार रहो।' यह सीधा सादा सन्देश था जो वैसी ही सरल भाषा में दिया गया था। लेकिन इसका प्रभाव जबरदस्त और विस्मयकारी था।

गाँधीजी का सन्देश भीड़ के पास सत्याग्रहियों के पहुंचने से पहले ही पहुंच जाता था। सब जान गए थे कि गाँधीजी और सत्याग्रही क्यों नमक कानून का उल्लंघन करने जा रहे हैं। अरुण टुकड़ी पहले ही रेलगाड़ी द्वारा हर गांव में पहुंच जाती थी। संदेश देती और गाँधीजी एवं सत्याग्रहियों के रहने का प्रबन्ध करती।

यात्रा के दौरान भी आश्रम की दिनचर्या को चालू रखा गया। दिन में दो बार प्रार्थना होती। सभी को चर्खा कातना पड़ता और अपनी-अपनी डायरी लिखनी पड़ती। वे दिन में लगभग 20 किलोमीटर चलते। कई थक जाते। लेकिन गाँधीजी को, जो उन सबसे उम्र में अधिक थे, कोई कठिनाई नहीं हो रही थी। वह अपने अनुयायियों को चिढ़ाने के लिये कहते, 'आधुनिक पीढ़ी कमज़ोर है



और लाड़-प्यार से बिगड़ी हुई है।' गाँधीजी के उपयोग के लिये एक घोड़ा भी साथ था मगर वह उस पर कभी नहीं चढ़े।

प्रतिदिन प्रार्थना के पश्चात् गाँधीजी सत्याग्रहियों को सम्बोधित करते और यदि कोई प्रश्न होता तो उसका उत्तर भी देते। रात्रि विश्राम के बाद अगले दिन यात्रा ठीक प्रातः छह बजे आरम्भ हो जाती। समय महत्वपूर्ण था। गाँधीजी ने कहा, 'यह हमारी तीर्थयात्रा है। हमें अपने एक-एक पल का हिसाब रखना चाहिये।' सब लोग रात नौ बजे सो जाते। लेकिन अन्य लोगों के उठने से बहुत पहले ही गाँधीजी आमतौर पर सुबह 4 बजे ही उठ जाते जिससे लोगों के पत्रों के उत्तर दे कर काम निपटा लें। एक रात तो वह चांदनी में ही लिखते रहे क्योंकि उनके लैम्प का तेल खत्म हो गया था। लेकिन उन्होंने किसी को उठाया नहीं, जिससे कोई परेशान न हो।

प्रत्येक सोमवार को गाँधीजी का मौनव्रत रहता और सत्याग्रहियों के लिये यह आराम का दिन होता। पांच वर्ष पहले गाँधीजी ने सोमवार को मौनव्रत रखने का निश्चय किया था और अपना यह नियम वह किसी के लिये नहीं तोड़ते थे। सोमवार के दिन चाहे उन्हें वाइसराय या किसी अन्य ऊंचे अधिकारी से भी मिलना होता तो भी वह उनसे लिख कर ही बातें करते। एक बार उनसे पूछा गया कि वह सोमवार को बोलते क्यों नहीं? उन्होंने हंस कर उत्तर दिया, 'मैं सप्ताह में एक दिन आराम करना चाहता हूं। बहुत से लोग मुझसे कई प्रश्न पूछते हैं और मुझे एक क्षण भी आराम नहीं मिलता। मुझे भी तो एक छुट्टी चाहिये।'

सत्याग्रही सुबह की ठंडक में चलते और दोपहर को किसी एक गांव में आराम करते। फिर शाम को चलते और रात अन्य गांव में बिताते। वे खुले में सोते और सादा भोजन करते। गांववालों से कहा गया कि वे सत्याग्रहियों के भोजन और रहने-खाने पर कोई खर्चा न करें। उन्हें धन दान देने के लिये भी मना कर दिया गया। गाँधीजी ने उनसे कहा, 'केवल धन से स्वराज नहीं मिलेगा। अगर उससे मिलता तो मैं बहुत पहले ही ले लेता। उसके लिये तुम्हें अपना खून देना होगा।' सत्याग्रहियों को हर पड़ाव पर केवल बिना पका भोजन और

सोने के लिये साफ-सुथरा स्थान चाहिये होता था।

डांडी मार्च केवल एक राजनैतिक अभियान ही नहीं था। इसका ध्येय लोगों को शिक्षा देना भी था। सादा जीवन बिताने और गांव वालों से कम से कम चीज़ों की मांग से गाँधीजी इस बात पर बल देते थे कि वह गरीबों और दलितों के साथी हैं। इसलिये उन्होंने अपने उन साथियों की आलोचना की जिन्होंने लारी द्वारा सूरत से ताज़ा दूध और सब्जियां मंगवाई। उन्हें यह भी पसन्द नहीं था कि लोग बहाना ढूंढ़ कर पास से गुज़रती बैलगाड़ियों या कारों में चढ़ बैठें। एक रात जब उन्होंने देखा कि एक मजदूर सत्याग्रहियों के लिये एक भारी कैरोसिन लैम्प लेकर चल रहा है तो उन्हें बड़ा गुस्सा आया।

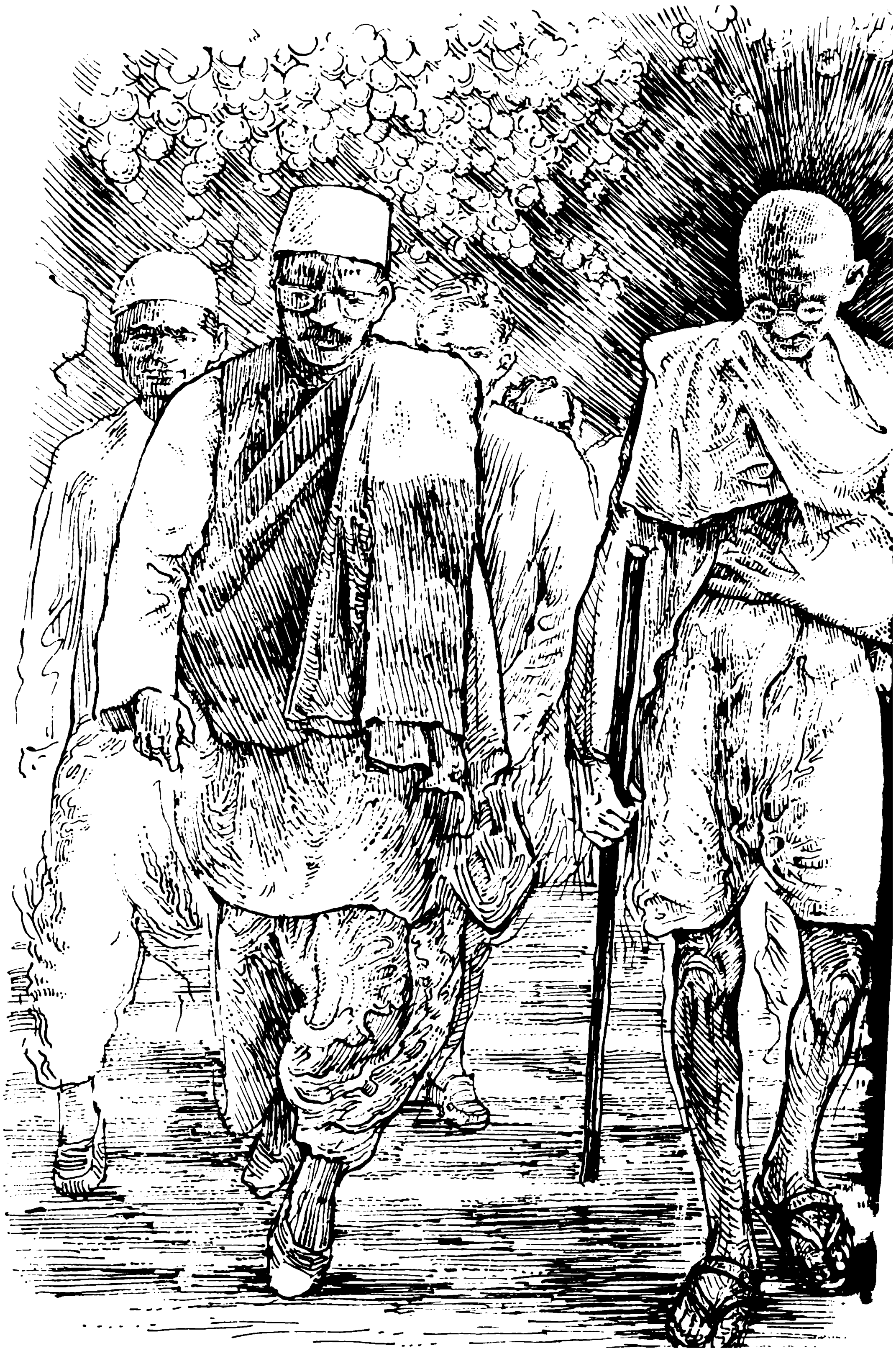
वह इस बात पर ज़ोर देते थे कि यह आन्दोलन उन गरीबों और किसानों के लिये है जिनकी संख्या ही भारत में अधिक है। वह सब प्रकार के शोषण का विरोध करते थे। उन्हें इसका कोई कारण समझ नहीं आता था कि अंग्रेजों के शोषण का स्थान भारतीय शोषण क्यों ले।

उन्होंने कहा कि हम सरकार के ठाठबाट और विलासमय जीवन की आलोचना कैसे कर सकते हैं यदि हम भी वैसा ही जीवन बिताने लगें। हमें वैसे ही रहना चाहिये जैसे इस देश की आम जनता रहती है। हमें उन लोगों से, जिनके बीच हम रहते और काम करते हैं, ज्यादा अच्छा भोजन खाने का क्या अधिकार है?

'उन साधनों से अधिक साधनों का इस्तेमाल करना जो एक गरीब देश की सामर्थ्य नहीं है, चोरी के भोजन पर जीवित रहने जैसा ही है।' वह बोले, 'स्वतन्त्रता की लड़ाई, चोरी का भोजन खा कर नहीं लड़ी जा सकती।'

जहां-जहां गाँधी जी ठहरते, स्थानीय नेता उनसे मिल कर सविनय अवज्ञा आन्दोलन आरम्भ करने के लिये विचार-विमर्श करते रहते जिसे वे अपने-अपने क्षेत्रों में नमक कानून के उल्लंघन के बाद शुरू करने वाले थे।

गाँधीजी की ललकार के उत्तर में 300 गांवों के मुखियों ने



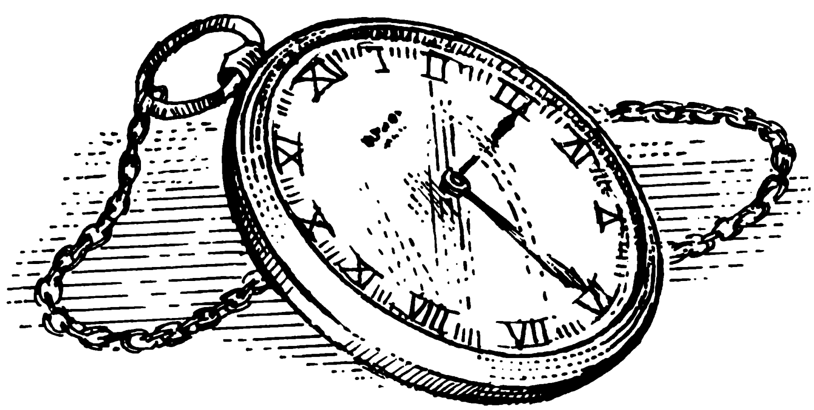


ऐतिहासिक डांडी मार्च

सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। गाँधीजी को अपने उत्तेजित अनुयायियों पर नियन्त्रण रखना पड़ता जो उन सरकारी नौकरों का जिन्होंने इस्तीफा नहीं दिया था सामाजिक बहिष्कार करने पर तुले हुए थे। कई स्थानों पर बहिष्कार इतना सख्त था कि गांव के अधिकारी और सिपाही भोजन भी नहीं खरीद पाते थे। गाँधीजी ने लोगों से कहा कि यह हमारे धार्मिक सिद्धान्तों के विरुद्ध है कि अधिकारियों को भूखा रहने दिया जाये। उन्होंने कहा, 'यदि जनरल डायर को सांप काट ले तो मैं उसका जहर चूस लूंगा।'

यह जनरल डायर वही था जिसने ग्यारह वर्ष पहले जलियां वाला बाग में हत्याकांड करवाया था। उसे और उसके जघन्य कार्य को भुलाया नहीं जा सकता था। गाँधीजी को इस समय इस का स्मरण खड्ग बहादुर गुरखा के शब्दों से आया था, जो मार्च में शामिल होना चाहता था। वह गाँधीजी के 'न' कहने से उदास हो गया। उसने कहा कि वह उन गुरखा लोगों के पापों का प्रायश्चित करना चाहता था जिन्होंने जनरल डायर का आदेश मान कर शान्त और अहिंसक भीड़ पर गोलियां बरसाई थीं।

इस तरह साबरमती आश्रम से चलने वाले अठहत्तर सत्याग्रहियों में एक और शामिल हो गया।



धीमे डांडी मार्च ने, जिसमें 24 दिन लगे—केवल भारत के लोगों का ही नहीं बल्कि सारे संसार का ध्यान इस ओर आकर्षित किया।

सब समाचार पत्रों और समाचार-फिल्मों में इसी के समाचारों की प्रधानता रहती थी। जब सरकार ने भारत के कई प्रान्तों में मार्च की समाचार फिल्मों पर प्रतिबन्ध लगा दिया तो गाँधीजी के सचिव ने कहा, 'भारत का स्वतंत्रता आन्दोलन सिनेमा की फिल्मों पर निर्भर नहीं करता।'

सारे देश का ध्यान गाँधीजी पर लगा हुआ था। नेहरू ने कहा, 'और आज तीर्थयात्री अपनी लम्बी यात्रा पर जा रहा है। डंडा पकड़े वह गुजरात की धूल भरी सड़कों पर चलता है, स्पष्ट दृष्टि और दृढ़ कदमों के साथ वह अपनी वफादार टोली के साथ आगे बढ़ रहा है। भूतकाल में उन्होंने कई यात्रायें की हैं और कई सड़कों पर चले हैं। लेकिन और अन्य सब यात्राओं से, जो उन्होंने पहले की थीं, यह यात्रा अधिक लम्बी है। उनके रास्ते में कई बाधायें हैं। उनमें निश्चय की दृढ़ता है और है अपने दुखी और गरीब देशवासियों के लिये असीम प्रेम। सत्य के प्रति प्रेम जलाता है और स्वाधीनता का प्रेम प्रेरणा देता है.. यह एक लम्बी यात्रा है क्योंकि इसका उद्देश्य है भारत की पूर्ण स्वाधीनता और भारत के करोड़ों लोगों के शोषण का अन्त।'

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की सभा 21 मार्च को, डांडी मार्च के आरम्भ होने के 9 दिन पश्चात, अहमदाबाद में हुई। उन्होंने

महात्मा गाँधी के आन्दोलन का अनुमोदन किया और आशा व्यक्त की कि सारा देश इस में सहयोग देगा। उन्होंने प्रांतीय कांग्रेस कमेटियों को अधिकार दिया कि महात्मा गाँधी द्वारा नमक कानून उल्लघंन के बाद वे सब अपने-अपने प्रांत में नमक कानून का उल्लंघन नियोजित ढंग से करें।

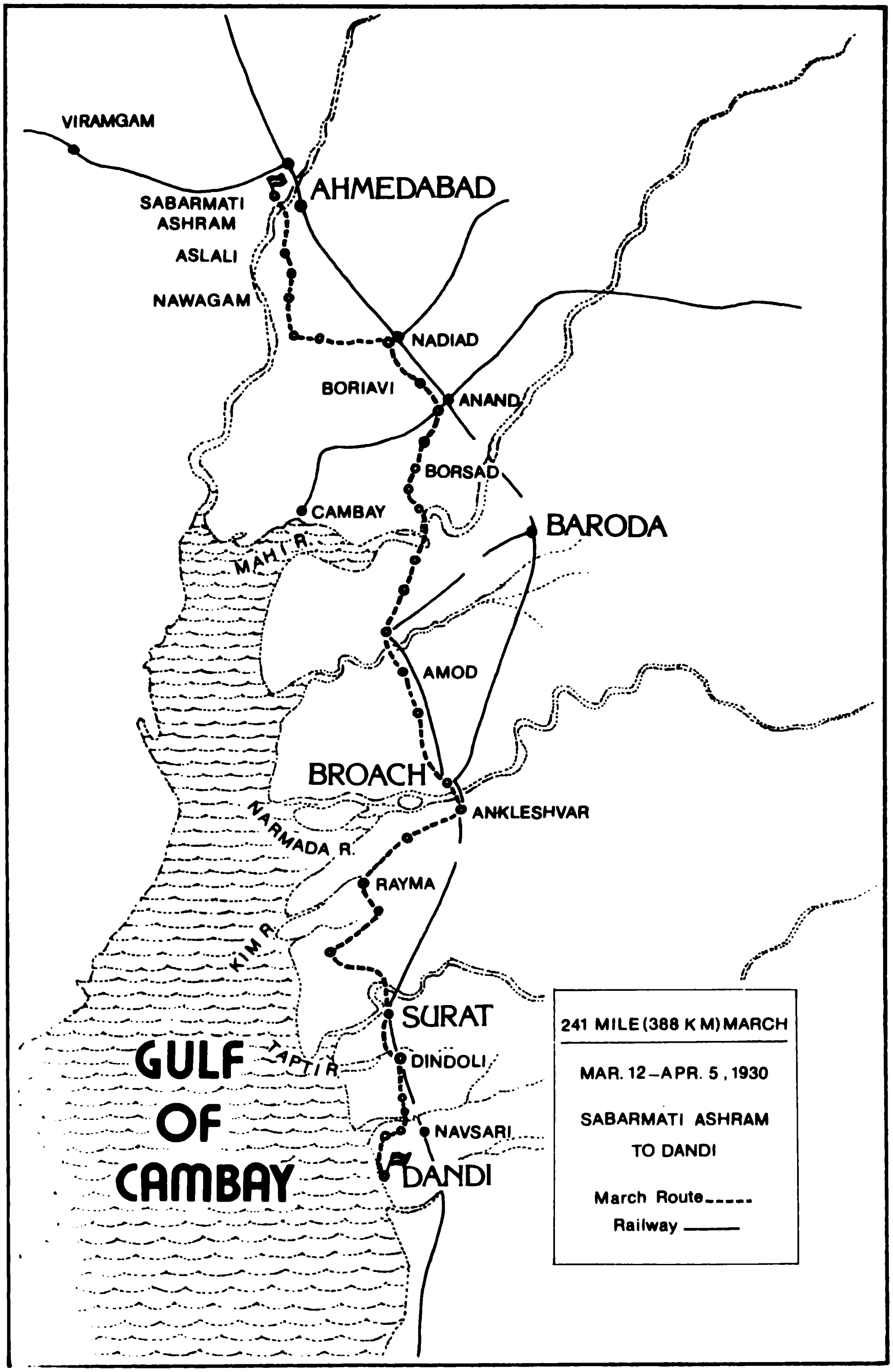
पंडित नेहरू, जो उस समय भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान थे, जम्बुसर में गाँधीजी से मिले। उनके साथ पिता मोतीलाल नेहरू भी थे।

उन्होंने उस प्रतिज्ञा का मसौदा बनाया जो सत्याग्रह में भाग लेने वाले हर स्वयंसेवक को लेनी होगी। उसमें कहा थाः

1. मैं भारत की स्वतन्त्रता के लिये राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा आरम्भ अवज्ञा आन्दोलन में भाग लेना चाहता हूं।
2. मैं राष्ट्रीय कांग्रेस के सिद्धान्तों से सहमत हूं कि भारतवासियों को पूर्ण स्वराज्य मिलना चाहिये। इसके लिए हम वैध और शान्त तरीके अपनायेंगे।
3. इस आन्दोलन के दौरान मैं जेल जाने और जो भी दुख और सज़ा मिले उसे झेलने को तैयार हूं।
4. यदि मुझे जेल भेज दिया गया तो मैं अपने परिवार के लिये कांग्रेस फंड से धन की सहायता नहीं मागूंगा।
5. मैं आन्दोलन के नेताओं का आदेश मानूंगा।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि हजारों इस प्रतिज्ञा को लेने के लिए तैयार थे। जैसे-जैसे सत्याग्रही आगे बढ़ते गये सारे देश में देशभक्ति की लहर फैल गई। सारे भारत में राष्ट्रीय ध्वज फहराए गये और कानून उल्लंघन के समर्थन में भाषण दिये गये।

बहुत से लोग गिरफ़्तार किये गये और जेल भेज दिये गये। लेकिन फिर भी वे गाँधीजी के निर्देशानुसार शान्त रहे। उन्होंने कहा था, 'यदि तुम्हें जेल भेजा जाये तो तुम्हें धर्मनिष्ठा से जाना चाहिये। यदि तुम्हें मारा-पीटा जाये तो उसे प्रसन्नता से सहो और तुम पर गोली


VIRAMGAM
AHMEDABAD
SABARMATI
ASHRAM
ASLALI
NAWAGAM
NADIAD
BORIAVI
ANAND
BORSAD
CAMBAY
BARODA
MAHI R.
AMOD
BROACH
ANKLESHVAR
NARMADA R.
RAYMA
KIM R.
SURAT
TAPTI R.
DINDOLI
NAVSARI
DANDI
GULF
OF
CAMBAY
241 MILE (388 K M) MARCH
MAR. 12–APR. 5, 1930
SABARMATI ASHRAM
TO DANDI
March Route
Railway

चलाई जाये तो शान्ति से मरो।'

लोगों पर महात्मा गाँधी का ऐसा प्रभाव था कि लोग बिना किसी प्रश्न के उनके पीछे चलने को तैयार थे। वह उनके उद्देश्य को उचित और न्यायसंगत समझते थे और उनके शब्दों को याद रखते थे। 'वर्तमान सरकार भ्रष्ट और बुरी है। ऐसी बुरी सरकार के प्रति वफादारी पाप है। वफादार न होना ही अच्छा है। यह बात कि तीन सौ अंग्रेजों से तीस करोड़ लोग डरते रहे हैं, राज्य करने वालों और प्रजा दोनों के लिये नैतिक पतन का कारण है। जिन्होंने इसकी बुराई महसूस की है उन लोगों का कर्त्तव्य है कि इसे नष्ट कर दें। यह लक्ष्य पाने के लिये उन्हें कोई भी खतरा उठाने से नहीं डरना चाहिये।'

इतनी शक्तिशाली राष्ट्रीय भावना जाग उठी थी कि उसे देख सरकार कुछ डर गई। ऐसे संकेत मिले कि वह कमजोर हो रही है। उन्होंने वायदा किया कि नमक कर की समस्या शुल्क समिति के सामने रखेंगे, जिससे नमक जनता को बहुत कम कीमत में मिल सके। लेकिन गाँधीजी केवल इतनी बात से संतुष्ट नहीं थे।

सत्याग्रही अब समुद्र के निकट पहुंच रहे थे। ताड़ के पेड़ ज्यादा दिखाई देने लगे, समुद्री पक्षी भी दिखने लगे थे और समुद्र से भीतर की ओर बहती ठंडी हवा भी सब महसूस कर रहे थे। नवसारी से छोटे शहर में, डांडी से केवल 20 किलोमीटर दूर, गाँधीजी ने एक सभा को सम्बोधित किया और कहा, 'मैं जो चाहता हूं वह लेकर ही वापस जाऊंगा नहीं तो मेरी लाश समुद्र में तैरेगी।'

तीन अप्रैल को गांधीजी ने 'यंग इंडिया' में एक लेख लिखा जिसमें उन्होंने जनता को सविनय अवज्ञा आन्दोलन करने को कहा था और उसे 6 अप्रैल से आरम्भ करने की घोषणा की जब स्वयं वह भी डांडी में नमक कानून तोड़ेंगे। इस तारीख का चुनाव 'राष्ट्रीय सप्ताह' के आरम्भ से मेल खाते हुए रखा गया, जो सन् 1919 में जलियांवाला बाग के हत्याकांड के शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिये मनाया जाना था।

पांच अप्रैल की सुबह को सत्याग्रही डांडी पहुंच गये। बंगले के मालिक ने, जो एक व्यापारी था, उन्हें यह बंगला रहने के लिये दिया

था। उन्होंने वह दिन प्रार्थना और ध्यान में बिताया। उन्हें वेद मंत्र पढ़कर सुनाये गये। बंगले से वह समुद्र की उमड़ती-घुमड़ती उत्ताल तरंगों को देख सकते थे। रेत पर सफेद नमक चादर की तरह फैला हुआ था, जो समुद्र उपहार के तौर पर पीछे छोड़ गया था।

वहां कई पत्रकार थे जो गाँधीजी से साक्षात्कार करना चाहते थे और उन्होंने एसोसिएटेड प्रेस के संवाददाता से कहा 'मैं सरकार की अहस्तक्षेप नीति की प्रंशसा किए बगैर नहीं रह सकता, जो उन्होंने पूरी यात्रा के दौरान अपनाई है। अब यह देखना बाकी है कि क्या सरकार कल जनता द्वारा बड़े पैमाने पर नमक कानून का वास्तविक उल्लंघन भी उसी तरह सहन करती है जैसे उन्होंने अब तक किया है... यदि भगवान ने चाहा तो! अपने साथियों समेत कल सुबह 6.30 बजे 'से अवज्ञा आन्दोलन आरम्भ करूंगा।'

'जलियांवाला हत्याकांड के बाद से 6 अप्रैल हमारे लिये तप और अपने को शुद्ध करने का दिन बन गया है। इसलिये हम इसे प्रार्थना और उपवास से आरम्भ करते हैं। मुझे आशा है कि सम्पूर्ण भारत कल से शुरू होने वाले राष्ट्रीय सप्ताह को उसी भावना से मनायेगा जिस भावना से इसे शुरू किया गया है।

'मुझे निरंकुश शक्ति के विरुद्ध अधिकारों के संघर्ष में सारे संसार की सहानुभूति चाहिये।'

जो सत्याग्रही गाँधीजी के साथ आये थे, समुद्र तट पर विचरते रहे। कई समुद्र में नहाये भी। जिस बंगले में गाँधीजी ठहरे थे उसमें पुलिस लगी हुई थी लेकिन सब कुछ शान्तिपूर्ण था, इसलिये उनको चिन्ता करने का कोई कारण नहीं था।

छह अप्रैल 1930 की सुबह को जब गाँधीजी बंगले की सीढ़ियों से उतरे तो हर्ष ध्वनि द्वारा हजारों लोगों ने जो रात भर वहां इकट्ठे होते रहे थे उनका स्वागत किया।

गाँधीजी कुछ देर समुद्र में तैरते रहे। जब उनके साथियों ने कहा कि सत्याग्रह आरम्भ करने का समय हो रहा है तो वह बाहर आये। फिर गाँधीजी ने झुक कर मुट्ठी भर नमक उठा लिया।

उस समय गाँधीजी का चेहरा बिलकुल शान्त था, जब उन्होंने मुट्ठी खोल कर सफेद नमक भीड़ को दिखाया। भारत के स्वतंत्रता संग्राम का यह सबसे नया प्रतीक था।

कुछ देर बाद सत्याग्रही एक निकट की खाड़ी में गये जहां जमा नमक की तह तट से मोटी थी। एक दूसरी खाड़ी में पास के गांव के 56 स्वयंसेवकों ने नमक इकट्ठा किया और थैलों में भर कर ले गये।

पूरा कार्य बहुत व्यवस्थित तरीके से किया गया। नेता सीटी द्वारा उन्हें हर चरण का संकेत देता जा रहा था। ऐसा लगता था मानो दल को पहले काफी प्रशिक्षण दिया गया हो।

उस सुबह करीब 500 किलो नमक इकट्ठा किया गया। दोपहर को पुलिस ने वह नमक जब्त कर लिया। लेकिन जैसे ही पुलिस गई, गांववालों ने नमक फिर इकट्ठा किया और गांव के लोगों में बांट दिया।

नमक कानून तोड़ दिया गया था। भारतीयों को कुछ कर गुजरने का संकेत मिल गया था। एक प्रेस वक्तव्य में गांधीजी ने लोगों से हर कहीं नमक कानून का उल्लंघन करने के लिये कहा। जो लोग साफ



डांडी के समुद्रतट पर गाँधी जी एक मुट्ठी नमक उठा कर
नमक कानून का उल्लंघन कर रहे हैं

करके नमक बनाना जानते हैं उन्हें यह कार्य दूसरों को भी सिखाना चाहिये। लेकिन गांववालों को यह स्पष्ट तौर से बता देना मेरा कर्त्तव्य है कि नमक बनाने से उन्हें गिरफ़्तारी, जुर्माने और कैद का खतरा है। कानून का उल्लंघन खुले रूप से होना चाहिये।

नमक कानून को राष्ट्रीय सप्ताह के दौरान बराबर भंग किया जाना था। लोगों से विदेशी कपड़े और अन्य चीज़ों का बहिष्कार करने और उसके बदले खादी पहनने के लिए कहा गया। लोगों से कहा गया कि वे शराब पीना छोड़ दें।

सम्पूर्ण देश में ऐसे पैम्फलेटों की बाढ़-सी आ गई जिनमें समुद्री पानी से नमक बनाने का तरीका दिया हुआ था। भारत के लम्बे समुद्र तट पर गांव वाले समुद्र में बरतन लेकर घुसने लगे।

समुद्र से दूर के भागों में भी लोग नमक बनाते। जन सभायें होतीं, उत्तेजक भाषण दिये जाते और बड़े-बड़े जुलूस निकलते। भारत के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक विदेशी कपड़ों की होलियां जलाई गईं। शराब की दुकानों पर धरना दिया जाता। कुछ सरकारी कर्मचारियों ने इस्तीफे दे दिये।

गुजरात में सविनय अवज्ञा आन्दोलन तेज़ी से फैला। सरकार ने नेताओं को गिरफ़्तार कर लिया। लेकिन नये नेता उनका स्थान लेने के लिए आगे आये। गाँधीजी ने गिरफ़्तार होने वालों को बधाई दी। 'कैद और इस तरह की बातें ऐसी परीक्षाएं हैं जिसमें से सत्याग्रही को गुजरना ही पड़ता है,' उन्होंने कहा।

उन्होंने लोगों से कहा, 'एक अहिंसक व्यक्ति की मुट्ठी में नमक भारत के सम्मान का प्रतीक है। हाथ नमक नहीं देगा चाहे हाथ के टुकड़े ही क्यों न कर दिए जाएं। लोगों को अपने पास के नमक की रक्षा तब तक करनी चाहिये जब तक इस प्रयास में वे टूट न जायें। लेकिन यह सब उन्हें बिना क्रोधित हुए करना चाहिये।'

13 अप्रैल को डांडी में गाँधीजी ने महिलाओं की सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि उन्हें भी राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल हो जाना चाहिये।

गाँधी के निर्देशों का पालन कितनी अच्छी तरह से हुआ, यह तब

पता चला जब पुलिस ने बम्बई में कांग्रेस हाउस पर छापा मारा। वे लपक कर सीढ़ियां चढ़ गये और छत पर पड़े नमक के बत्तीस बर्तनों को तोड़ डाला। इस काम में उन्हें दो घंटे लगे। तब तक इमारत के आसपास और इस ओर आने वाली सड़कों पर 60,000 लोगों की भीड़ जमा हो गई।

जब सिपाही छत से नीचे आये और आफिस में घुसने का प्रयास किया, तो छह औरतों ने उनका रास्ता रोका। उनकी नेता ने कहा, 'आप चाहें हमें गिरफ़ार कर लें या कुछ भी करें लेकिन जिस स्थान पर हमारी ड्यूटी है हम उसे छोड़ कर नहीं जायेंगे।'

सिपाही धैर्य खोकर औरतों को एक ओर धकेलने लगे। बाहर भीड़ राष्ट्रीय गीत गा रही थी। तब उन्होंने अपना ध्यान नीचे पड़े नमक के बर्तनों की ओर दिया। लेकिन एक सौ स्वयंसेवकों के दल ने उन बर्तनों को घेर लिया था। और यह घेरा बार-बार हमला करने पर ही टूटा। स्वयंसेवकों ने प्रसन्नता से हमले झेले मगर सिपाहियों को कुछ नहीं कहा। यहां तक कि उन्हें पीछे भी नहीं धकेला। बाहर की भीड़ भी बिलकुल शान्त रही।

यह अहिंसक आन्दोलन का अनोखा प्रर्दशन था और इस ने गाँधी जी के हृदय को अवश्य हर्षित किया होगा। भीड़ आसानी से थोड़े से सिपाहियों को पकड़ सकती थी लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। स्वयंसेवकों के धैर्य, साहस और देशभक्ति देखकर कई और लोगों ने सत्याग्रह करने के लिये अपना नाम लिखाया।

जैसे ही आन्दोलन अधिक फैला गैर कानूनी तरीके से बनाया या इकट्ठा किया हुआ नमक खुले आम शहरों के बाज़ारों में बिकने लगा। अहमदाबाद में अवैध तरीके से सत्याग्रह के पहले सप्ताह में बनाया नमक, जिसकी कीमत 11,000 रुपये थी, बेचा या बांट दिया गया। गाँधीजी द्वारा डांडी में उठाया नमक इतनी निम्न कोटि का था कि उपयोग में भी नहीं लाया जा सकता था। लेकिन इस का मूल्य प्रतीकात्मक था। जब उसकी नीलामी हुई तो उस की कीमत 1600 रुपये मिली।

आन्दोलन के फैलने पर और अधिक लोग गिरफ़ार हुए। कुछ ही दिनों में करीब एक लाख लोग जेलों में ठूंस दिये गये।

सरकार अब निष्ठुरता बरतने लगी थी। यह बात आम हो गई कि चार-पांच सिपाही अकेले सत्याग्रही पर झपट पड़ते और उसकी कलाई या अंगूठा मरोड़ देते, उसे नीचे गिरा कर तब तक रौंदते, ठोकरें मारते जब तक वह लहूलुहान न हो जाता और अपने पास का नमक न दे देता।

एक प्रत्यक्षदर्शी ने उड़ीसा के बालासोर जिले में नमक सत्याग्रह का विवरण यूं दिया है—जब स्वयंसेवक नमक वाली मिट्टी को नमक बनाने के लिये ला रहे थे तो सिपाहियों ने उन पर हमला किया। उन्हें पीटने व पैरों से ठोकरें मारने लगे। सिपाहियों की क्रूरता झेल रहे स्वयंसेवकों का धीरज देख, दर्शकों की आंखों में भी आंसू आ गये। आखिर मारने और ठुकराने से उकता कर सिपाही वहीं स्वयंसेवकों के पास खड़े रहे। स्वयंसेवक नमक वाली मिट्टी के ढेर बनाते, सिपाही ढेरों को फैला कर सपाट कर देते। इन सब के बावजूद स्वयंसेवक सुबह से दोपहर तक और दोपहर में तीन से शाम छह बजे तक अपना काम करते रहे। बहुत से लोग नमक की मिट्टी अपने शिविर में ले जाने में सफल हुए और उन्होंने उससे नमक बनाया। यह नमक खुले आम बालासोर शहर में बेचा गया।

पुलिस ने यह प्रयास किया कि स्वयंसेवक नमक वाली मिट्टी एकत्र न कर सकें। वे उनके हाथ पकड़ लेते। लेकिन वे सत्याग्रहियों को रोकने में असफल रहे। नमक बना और बालासोर में फिर बिका।

इस दौरान निकट के गांवों के लोगों ने भी नमक बनाना आरम्भ कर दिया। अधिकारी जानते थे मगर कुछ विशेष नहीं कर सके क्योंकि हजारों लोग एक साथ इस कानून का उल्लंघन कर रहे थे। किस-किस को पकड़ते। अब उन्होंने यह नीति अपनाई कि नेता लगने वाले व्यक्तियों को गिरफ़्तार कर लो लेकिन इससे वे लोगों को रोक नहीं पाये।

गांववालों ने इस का प्रतिकार सरकारी सेवकों का बहिष्कार करके किया। कोई अधिकारी कोई भी चीज़ गांव में नहीं खरीद सकता था। सब कुछ बालासोर से लाना पड़ता।

सरकारी कर्मचारियों का ऐसा सामाजिक बहिष्कार सारे भारत में हुआ। इससे इन अफसरों को बहुत परेशानी हुई।

सब जगहों से सिपाहियों की क्रूरता की सूचनायें मिल रही थीं। दिल्ली से रिपोर्ट मिली थी कि दस सत्याग्रही घायल हुए थे। उनमें से पांच की दशा गम्भीर थी। पुलिस ने उनके हाथ से नमक की एक बाल्टी छीननी चाही थी।

बिहार से डा० राजेन्द्र प्रसाद ने, जो बाद में स्वाधीन भारत के प्रथम राष्ट्रपति बने, यह रिपोर्ट दीः

'हमारी योजना के अनुसार पांच स्वयंसेवकों का पहला जत्था सुबह सड़क पर चल रहा था जब कुछ घुड़सवार सिपाही, जिनका नेतृत्व एक यूरोपियन अफसर कर रहा था, उन पर झपटे। तीन स्वयंसेवकों को यूरोपियन द्वारा बड़ी निष्ठुरता से पीटा गया और फिर नाले में फेंक दिया गया, जहां से हमारे स्ट्रेचर-वालों ने उन्हें उठाया।

'स्वयंसेवकों का दूसरा दल भेजा गया लेकिन उन्हें भी पीटा गया। शाम को पांच स्वयंसेवकों का एक और दल भेजा गया। पुलिस ने उन्हें ललकारा और उनके हाथों से झंडों को छीनने का प्रयास किया। दो यूरोपियन अफसरों ने नेताओं पर अपने बेतों से प्रहार किया। लेकिन लोगों ने इसका कोई प्रतिकार नहीं किया और न ही लड़े।'

जब हजारों लोग पटना से उस स्थान की ओर चले जहां नमक बन सकता था, तो पुलिस ने उनका रास्ता रोक लिया। लोगों का

समूह सड़क और आसपास के खेतों में चालीस घंटे तक पड़ा रहा।

डा० राजेन्द्र प्रसाद ने, जो दल का नेतृत्व कर रहे थे, भीड़ को तितर-बितर होने के लिये कहने से मना कर दिया, तो घुड़सवार पुलिस को यह काम सौंपा गया। जैसे ही भागते हुए घोड़े आगे आये, पुरुष और औरतें जमीन पर लेट गये। घोड़ों ने अपने अगले पांव ऊपर उठा दिये और रुक गये। घोड़े आदमियों को रौंदना नहीं चाहते थे। तब सिपाहियों ने उन लोगों को उठाया, जो ज़मीन पर लेटे थे, और जेल में डाल दिया। लेकिन अन्य सत्याग्रहियों ने उनका स्थान ले लिया।

लुधियाना, पंजाब, में पचास आदमी पुलिस लाठी-चार्ज से घायल हुए।

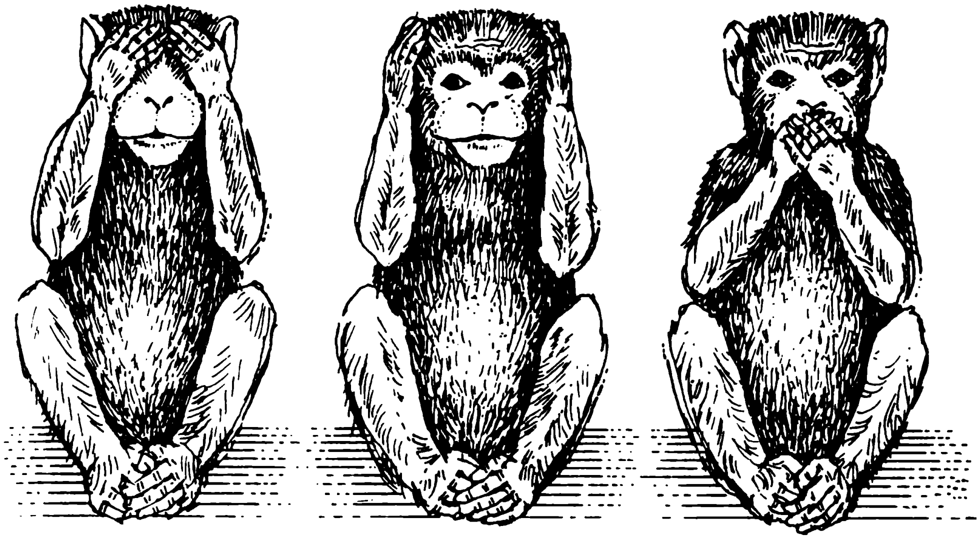
पेशावर में, जो उत्तर पश्चिम सीमा प्रदेश का शहर है और अब पाकिस्तान का हिस्सा, सिपाहियों से भरी दो बख्तरबन्द गाड़ियां सभा से वापस जा रही भीड़ पर चढ़ा दी गई। कम से कम तीन लोगों की तत्काल मृत्यु हो गई और कई घायल हुए। इस उत्तेजना के विपरीत लोग शान्त रहे। जब लोग अपने घायलों और मृतकों को उठा रहे थे तब मोटर साइकिल पर सवार एक अंग्रेज अफसर भीड़ में घुस गया और बख्तरबन्द गाड़ी से जा टकराया। उसकी मृत्यु हो गई।

तब तक और अंग्रेज सिपाही उस स्थान पर पहुंच गये और उन्होंने बिना चेतावनी दिये भीड़ पर गोलियां बरसानी आरम्भ कर दी। भीड़ में महिला और बच्चे भी थे।

लोगों ने अहिंसा का जो पाठ पढ़ा था, उसका अच्छा प्रमाण दिया। जब अगली पंक्ति के लोग गिर पड़े तो पिछले लोग गोलियों का सामना करने आगे आ गए। जल्दी ही वहां लाशों और घायलों का ढेर लग गया। सुबह ग्यारह बजे से लेकर शाम पांच बजे तक गोलियां बरसती रहीं। कोई भी पंक्ति तोड़ कर नहीं भागा। जब लाशें इकट्ठी की गई तो देखा गया कि किसी भी सत्याग्रही की पीठ पर गोली नहीं लगी थी। किसी ने भी बदला लेने का प्रयास नहीं किया था। पुलिस ने भी स्वीकार किया कि भीड़ बिलकुल शान्त रही थी। किसी भी लड़ाई में इससे अधिक साहस नहीं देखा गया। गाँधीजी ने

अभूतपूर्व प्रेरणा दी थी। इस आन्दोलन की एक और ध्यान देने योग्य बात थी जिस तरीके से महिलाओं ने इसमें भाग लिया था। गाँधीजी सदा महिलाओं को बराबर का भागीदार समझते थे और उनकी असमर्थताओं को दूर हटाना चाहते थे। अब वे सत्याग्रह में भाग लेने के लिए आगे आईं थीं और उन दुकानों पर धरना देने लगीं जो विदेशी कपड़ा और शराब बेचती थीं। इससे सरकार सतब्ध रह गई।

गाँधीजी द्वारा आरम्भ किया हुआ आन्दोलन सफल हुआ था। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने लिखा, 'ऐसा लगता है मानों किसी ने सि्प्रंग को एकाएक मुक्त कर दिया हो। हमें इस आदमी की दक्षता पर आश्चर्य हुआ जो जनता को इस तरह प्रभावित कर रहा था कि वे बिलकुल संगठित तरीके से व्यवहार करें।'



4 मई 1930 को गाँधीजी ने वाइसराय को दूसरा पत्र लिखा। उस समय वह डांडी से 7 किलोमीटर दूर, एक छोटे से गांव करडी में थे। उन्होंने वाइसराय को फिर 'प्रिय दोस्त' कह कर सम्बोधित किया। उन्होंने लिखा मेरा इरादा है कि मैं अपने साथियों के साथ धरसना पहुंच कर सरकारी नमक फैक्टरी का कब्जा ले लूं। गाँधीजी ने लिखा कि सरकार इस 'हमले' को नमक-कर खत्म करके रोक सकती है जिसे शैतानी से 'हमला' नाम दिया गया है या उन्हें और उनके दल को गिरफ़ार करके रोक सकती है, या सत्याग्रहियों पर निष्ठुर हमला करके रोक सकती है।

गाँधीजी ने धरसना नमक वर्क्स पर कब्जा करने का कारण सत्याग्रहियों पर अमानुषिक अत्याचार होना बताया था।

उन्होंने लिखा, 'मुझे आशा थी कि सरकार सत्याग्रहियों का सामना मानवीय तरीके से करेगी। उसने जाने-माने नेताओं से तो कानून के अनुसार व्यवहार किया है मगर सामान्य सत्याग्रहियों पर क्रूरता से हमला किया गया।

'यदि यह इक्का-दुक्का घटनायें होती तो हम उसे अनदेखी कर देते मगर मुझे बंगाल, बिहार, उत्कल, उत्तर प्रदेश, दिल्ली और बम्बई से जो रिपोर्ट मिली हैं उन्होंने गुजरात में हुए अनुभवों की पुष्टि की है।

'कराची, पेशावर और मद्रास में, लगता है बिना किसी उत्तेजना के गोली चलाई गई... बंगाल में राष्ट्रीय झंडे को छीनने के दौरान सत्याग्रहियों पर बड़ी क्रूरताएं की गईं। धान के खेत तक जला दिये

गये और खाने की चीज़ें जबरदस्ती छीन ली गई। गुजरात में एक सब्जी बाज़ार पर रेड की गई क्योंकि दुकानदार सरकारी अधिकारियों को सब्जी नहीं बेचना चाहते थे।

'यह घटनायें उन लोगों के सामने हुईं जिन्होंने कांग्रेस के नियमानुसार बिना प्रतिक्रिया दिखाए आत्मसमर्पण कर दिया।

'सत्याग्रह के सिद्धान्त के अनुसार सरकार जितना दमन और गैरकानूनी काम करेगी उतना ही हम दुख और पीड़ा उठायेंगे। स्वेच्छा से सही गई पीड़ा की सफलता निश्चित है। मैं यही बात पिछले पन्द्रह वर्षों से भारत में कहता आ रहा हूं और देश से बाहर 20 से भी अधिक वर्षों से, और अब फिर दुहराता हूं कि हिंसा अहिंसा से ही जीती जा सकती है।'

गाँधीजी ने वाइसराय लार्ड अर्विन से विनती की कि नमक कर को खत्म कर दें।'जिसकी आपके कई देशवासियों ने निन्दा की है और जिसका सर्वव्यापक रूप से विरोध हुआ है और जो सविनय अवज्ञा के रूप में प्रकट हुआ। आप सविनय अवज्ञा आन्दोलन की निन्दा कर सकते हैं। क्या आप सविनय अवज्ञा आन्दोलन के स्थान पर सशस्त्र उग्र विरोध चाहेंगे?'

शाम हो चुकी थी। पत्र लिखने और नियमित कार्य खत्म करने के पश्चात गाँधीजी एक पुराने आम के पेड़ के नीचे बने शेड में एक चारपाई पर सो गये। उनके कुछ अनुयायी उनके पास ही सोये। बाकी लोग आम्रकुंज में इधर-उधर सो गये।

मध्य रात्रि में 12.45 पर भारी जूतों की अवाज से उनकी नींद खुली। सूरत का अंग्रेज जिला मजिस्ट्रेट, दो भारतीय अफसर और तीस सशस्त्र सिपाही साथ ले कर आया था। सशस्त्र सिपाहियों का एक दल शेड में घुस गया और महात्मा गाँधी के मुंह पर टार्च का प्रकाश फेंका। वह उठ गये और मजिस्ट्रेट से पूछा, 'क्या आप मुझे चाहते हैं?'

'तुम मोहनदास करमचन्द गाँधी हो?' जिला अधिकारी ने औपचारिक रूप से पूछा। 'हां,' गाँधीजी ने उसी औपचारिकता से उत्तर दिया।

अब डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ने कहा कि वह उन्हें गिरफ़्तार करने आया है तो गाँधीजी ने कहा, 'मुझे प्रक्षालन के लिये समय दीजिए।'

अधिकारी सहमत हो गया। गाँधीजी ने दांत साफ करते हुए पूछा, 'श्रीमान डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट, आप मुझे किस आरोप में गिरफ़्तार कर रहे हैं? क्या सेक्शन 124 के अधीन?'

'नहीं, सेक्शन 124 के अन्तर्गत नहीं। मेरे पास लिखित आदेश है,' एक रूखा उत्तर था।

गाँधीजी ने कहा, 'यदि आप को एतराज न हो तो कृपा करके मुझे इसे पढ़ कर सुनाइये?'

डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट, ने पढ़ा, 'गवर्नर-इन-काऊंसिल, मोहनदास करमचन्द गाँधी के कार्यों को भयप्रद तरीके से देखते हुए आदेश देते हैं कि उपर लिखे मोहनदास करमचन्द गाँधी को सन् 1827 के रेग्यूलेशन 25 के अन्तर्गत सरकार की इच्छानुसार तत्काल कैद करके यरवदा सेंट्रल जेल में भेज दिया जाये।'

गाँधीजी ने अपने कागज़ और चीज़ें एक थैले में डालीं और प्रार्थना करने के लिये कुछ मिनट और मांगे।

डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट, इस बात से भी सहमत हो गया। तब एक आदमी ने एक भजन बोला। फिर गाँधीजी डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट, के निकट आ गये जो उन्हें बाहर खड़ी गाड़ी में ले गया।

गाँधी जी बम्बई जाने वाली ट्रेन में चढ़ा दिये गये। अधिकारियों ने तय किया था कि उन्हें बोरिवली में उतार कर कार द्वारा यरवदा सेंट्रल जेल, पुणे, ले जाया जायेगा।

विदेशी पत्रकारों को इस की भनक लग गई कि क्या हो रहा है और वे सब बोरिवली स्टेशन पर जमा हो गये और गाड़ी की प्रतीक्षा करने लगे। जब बोरिवली स्टेशन पर गाड़ी खड़ी हुई तो एक अमरीकी संवाददाता ने पूछा, 'श्री गाँधी, क्या आप जाने से पहले कोई सन्देश देंगे?'

'अमरीकी लोगों से कहो कि इस मसले का अध्ययन ध्यान से करें और अपना फैसला उसकी गुण और योग्यता देखकर दें,' गाँधीजी ने उत्तर दिया।

'आपको किसी के प्रति कड़वाहट या गुस्सा नहीं है?' संवाददाता ने पूछा।

'नहीं। मुझे पकड़े जाने की बहुत पहले से आशा थी,' गाँधीजी ने उत्तर दिया।

'आपके ख्याल में क्या आपकी गिरफ़ारी से सारे भारत में झगड़े-फसाद होंगे?'

'नहीं, मुझे ऐसी आशंका नहीं है। मैं यही कह सकता हूं कि मैंने अपनी पूरी कोशिश की है कि किसी तरह का दंगा-फसाद न हो,' गाँधीजी ने उत्तर दिया।

गाँधीजी एक पर्दे वाली मोटर कार में यरवदा सेंट्रल जेल ले जाये गये। जेल अधिकारियों ने अपने कैदी का विवरण इस तरह लिखा 5 फीट 5 इंच (लगभग 166 सेंटीमीटर) पहचान के निशानः दाई जांघ पर चोट का निशान, दाई आंख की पलक पर छोटा-सा तिल और बाई कोहनी के नीचे मटर के दाने जैसा चोट का निशान।

न कोई मुकदमा हुआ, न फैसला और न ही कैद की अवधि निश्चित की गई। गाँधीजी को तब तक जेल में रखा जाना था जब तक सरकार इसे ज़रूरी समझती

जब गाँधीजी की गिरफ़ारी का समाचार चारों ओर फैला तो सब जगह प्रदर्शन हुए, लेकिन लोग अहिंसा पर कायम रहे। बम्बई, दिल्ली, नवसारी, सूरत और अहमदाबाद में हड़ताल की घोषणा की गई। अगले दिन कई अन्य स्थानों में भी हड़ताल फैल गई।

विदेशों में भी इस की प्रतिक्रिया हुई। पनामा के भारतीय व्यापारियों ने 24 घंटे के लिये अपना काम ठप्प कर दिया। सुमात्रा में भी यही हुआ। नैरोबी में भारतीयों ने दुकानें बन्द कर दीं। अमरीका से 102 पादरियों ने ब्रिटिश प्रधान मंत्री को एक तार भेजा कि गाँधीजी और भारतीयों के साथ मैत्रीपूर्ण फैसला कर लेना चाहिये। गाँधीजी तथा उनके कार्यों के समाचारों से यूरोपियन समाचार पत्र रंग गए।

यह देख कर कि गाँधीजी के कितने समर्थक हैं और इस डर से कि कहीं यरवदा सेंट्रल जेल पर ही सत्याग्रह न हो जाए, उन्हें गुप्त

रूप से पुरन्द्र की पहाड़ियों में स्थित शिवाजी के किले में ले जाया गया।

गाँधीजी को आशा थी कि उन्हें किसी भी समय गिरफ़ार कर लिया जायेगा। इसलिए उन्होंने 9 अप्रैल को ही भारतवासियों के लिये एक सन्देश लिखा था जो उनकी गिरफ़ारी के बाद प्रकाशित हुआ।

'यदि यह आन्दोलन जो इतनी अच्छी तरह आरम्भ हुआ, बराबर अहिंसा के सिद्धान्त पर आखिर तक चलता रहे तो वह समय दूर नहीं जब हम पूर्ण स्वराज्य पा लेंगे। इसके साथ-साथ हम दुनिया में ऐसा उदाहरण छोड़ेंगे जो भारत के तथा उसकी प्राचीन परम्पराओं के गौरव के अनुकूल होगा।

'बिना त्याग और बलिदान के मिला स्वराज्य ज्यादा देर तक नहीं टिक सकता। मेरे साथियों और जनता को मेरी गिरफ्तारी से परेशान नहीं होना चाहिये। इस आन्दोलन को मैं नहीं बल्कि ईश्वर चला रहा है।

'हर गांव वाला अवैध नमक लाए और बनाये, बहनें शराब और अफीम व विदेशी कपड़ों की दुकानों पर धरना दें। प्रत्येक घर में छोटे-बड़े चर्खा कातें जिससे हर रोज ढेरों सूत बने। विदेशी कपड़ों की होली जले।

'हिन्दुओं को छुआ-छूत छोड़ देनी चाहिये। हिन्दू, मुसलमान, सिख, पारसी और ईसाइयों के हृदय में एकता होनी चाहिये। छात्रों को सरकारी स्कूलों, कॉलेजों का बहिष्कार करना चाहिये। सरकारी नौकरों को अपनी नौकरी छोड़कर जनता की सेवा करनी चाहिये। तब हम देखेंगे कि सम्पूर्ण स्वराज हमारा दरवाजा खटखटायेगा।'

गाँधीजी गिरफ़ार हो गये थे इसलिए धरसना नमक डिपो पर की जाने वाली रेड का नेतृत्व नहीं कर सकते थे। इसलिए अब्बास तैयबजी करडी से रेड का नेतृत्व करने के लिये चल पड़े। 12 मई की सुबह सत्याग्रही जल्दी उठे, प्रार्थना की और क्रमबद्ध खड़े हो वे धरसना की यात्रा पर जाने के लिये तैयार थे। दल ने अभी चलना आरम्भ ही किया था कि उनका सामना सूरत के जिला मजिस्ट्रेट और सुपरिन्टेन्डेंट पुलिस एवं उनके साथ चार सौ सिपाहियों से हुआ जो राइफलों और लाठियों से लैस थे। अब्बास तैयबजी और अन्य सत्याग्रहियों को गिरफ़ार कर लिया गया। उन्हें बसों में बिठाकर जलालपुर ले जाया गया।

अब यह सरोजिनी नायडू की जिम्मेवारी थी कि वह सत्याग्रह का नेतृत्व करें। उस समय वह इलाहाबाद में कांग्रेस कार्यकारिणी समिति की बैठक में थीं। जब उन्हें अब्बास तैयबजी के गिरफ़ार होने की सूचना मिली, वह तत्काल धरसना की ओर चल पड़ीं जो बम्बई की उत्तर दिशा में 250 किलोमीटर दूर था।

सरोजिनी नायडू ने कहा, 'मैं विजयी होऊंगी या मर जाऊंगी। जब नमक डिपो के मिलिटरी चौकीदारों को हटा कर हम आगे बढ़ेंगे तो सत्याग्रहियों में सबसे आगे मैं रहूंगी। मैं कैंची से कांटेदार तार काट कर अपने हाथों से नमक छीनूंगी।'

'मैं स्त्री हूं लेकिन स्वतन्त्रता के इस आन्दोलन में मैं ऐसे भाग लूंगी जैसे कि पुरुष होऊं। मैं महसूस करती हूं कि महात्माजी और राष्ट्र ने मुझे कितनी बड़ी ज़िम्मेदारी सौंपी है। ईश्वर द्वारा भेजे इस

अवसर का अधिक से अधिक लाभ उठाऊंगी। जेल या मृत्यु मुझे भयभीत नहीं करेगी।'

15 मई को पौ फटते ही सरोजिनी नायडू और पचास स्वयंसेवक खादी के वस्त्रों में डिपो की ओर रवाना हुए। उनके पास कैंचियां थीं जिनसे कांटेदार तार काटे जा सकते थे। आधे घंटे के पश्चात उन्हें पुलिस के सिपाहियों ने रोका। पुलिस सुपरिन्टेन्डेंट ने सरोजिनी नायडू से कहा कि वह आगे नहीं जा सकतीं। उन्होंने उत्तर दिया, 'फिर मैं यहीं ठहरूंगी। मैं लौटकर पीछे भी नहीं जा रही।'

पुलिस सुपरिन्टेंडेंट ने कहा, 'जब तक आप यहां रहेंगी हम भी यहां ठहर कर सत्याग्रह करेंगे।'

उसके बाद दोनों पक्ष आमने-सामने बैठ गये। सरोजिनी नायडू को निकट के घर से एक कुर्सी मिल गई। वह बैठकर पत्र आदि लिखने लगीं और फिर चर्खा कातने लगीं। सिर पर सूर्य की प्रचण्ड धूप पड़ रही थी। लेकिन स्वयंसेवक वहीं सड़क पर बैठे रहे। उन्होंने छाया या छत की खोज नहीं की।

अट्ठाइस घंटे के इस शांत आमने-सामने के पश्चात पुलिस ने उन्हें गिरफ़्तार करने की धमकी दी। वह स्वयंसेवकों के शिविर में जाकर और दलों के डिपो तक जाने का प्रबन्ध करने लगीं। तब तक पुलिस ने बाकी लोगों को वहां से हटा दिया।

और स्वयंसेवकों ने उनका स्थान ले लिया और जब पुलिस उन्हें भी ले गई तो और अधिक स्वयंसेवक उनका स्थान लेने आ गए। स्वयंसेवक उकड़ू बैठकर अवसर की तलाश में रहते कि कब भाग कर कांटेदार तार तक पहुंच सकें। हर बार जब वे वहां पहुंचने का प्रत्यन करते पुलिस उनका रास्ता रोक लेती। चार दिन तक यह खेल चलता रहा। दो सौ पचास स्वयंसेवकों को सड़क से गिरफ़्तार करके निकट के अस्थायी जेल में डाल दिया गया।

20 मई को स्वयंसेवकों को आदेश मिला कि वे नमक के डिपो तक पहुंचने और वहां रखे नमक के बरतनों को छीनने के लिये हिंसा के सिवाय कोई भी साधन अपना सकते हैं। उनसे कहा गया कि अपने उद्देश्य में सफलता पाये बिना वे वापस न आयें। उस दिन एक



डांडी में गाँधी जी के साथ सरोजिनी नायडू

सौ पचास से अधिक स्वयंसेवक गिरफ़्तार हुए। लेकिन बाद में उन्हें छोड़ दिया गया।

अगले दिन चन्द्रमा की चांदनी में ही प्रार्थना की गई और सरोजिनी नायडू ने स्वयंसेवकों को धरसना नमक डिपो पर हमला करने के लिये उकसाया। उन्होंने कहा, 'भारत का सम्मान तुम्हारे हाथों में है। किसी भी दशा और स्थिति में हिंसा का उपयोग नहीं होना चाहिये। आपको पीटा जायेगा मगर आप इसका विरोध नहीं करेंगे। आपको उनके प्रहारों से बचने के लिये अपने हाथ भी नहीं उठाने होंगे। यद्यपि गाँधीजी का शरीर कैद में है, मगर उनकी आत्मा तुम्हारे साथ है।'

स्वयंसेवकों ने नारा लगाया, 'गाँधीजी की जय।' वे पंक्तिबद्ध हुए। उनके नेताओं के हाथ में रस्सियाँ और तार काटने की कैंचियां थीं। वे सब डिपो की ओर बढ़े।

कांटेदार तारों के पीछे चमकते नमक का ढेर लगा हुआ था। इसकी पहरेदारी चार सौ सिपाही कर रहे थे। इनकी कमान कई ब्रिटिश अफसरों के हाथ में थी।

गाँधीजी के दूसरे बेटे, मणिलाल गाँधी सत्याग्रहियों के बिलकुल आगे की पंक्ति में थे। कांटेदार तार के पास पहुंचते ही उन्होंने इंकलाब ज़िंदाबाद, इंकलाब ज़िन्दाबाद का नारा लगाया।

सत्याग्रहियों का दल साड़े छह बजे सुबह डिपो पर पहुंच गया। नेताओं ने तारों में लगे लकड़ी के खम्भों में रस्सी डाल कर उन्हें उखाड़ देना चाहा। उसी समय पुलिस उन पर लोहे की नोक वाली लाठियां लेकर लपकी।

एक भी सत्याग्रही ने अपने को बचाने के लिये हाथ नहीं उठाया यद्यपि पुलिस उन्हें बार-बार पीट रही थी। दो तीन मिनट में ही वहां की धरती गिरे हुए सत्याग्रहियों से पट गई। उनकी खोपड़ियां फट गई थीं और कन्धों की हड्डियां टूट गई थीं। उनके सफेद कपड़ों पर खून के बड़े-बड़े धब्बे पड़ गये थे। लेकिन उनके पीछे के सत्याग्रही बराबर आगे बढ़ते रहे जब तक उन्हें भी मार कर गिरा नहीं दिया गया।

जब पहले दस्ते में सब गिर पड़े तो स्ट्रैचर वाहक लपक कर आये और सब घायलों को उठा कर एक झोंपड़ी में ले गये।

फिर दूसरा दस्ता कांटेदार तारों की ओर बढ़ा। यह दस्ता भी मार कर गिरा दिया गया। कोई लड़ाई नहीं हुई। सत्याग्रही तब तक आगे बढ़ते थे जब तक वे घायल होकर गिर न पड़ते।

जो सत्याग्रही विरोध तक नहीं कर रहे थे उन की बर्बर पिटाई ने कई दर्शकों को क्रोधित कर दिया। नेतागण बड़ी कठिनाई से इन दर्शकों को शान्त रख रहे थे और गाँधीजी के निर्देशों की याद करा रहे थे। ब्रिटिश सुपरिन्टेंडेन्ट भी भीड़ के क्रोधीभाव को अनुभव कर रहा था इसलिय उसने पच्चीस सिपाही एक ऊंची ज़मीन पर खड़े कर दिये कि यदि भीड़ हिंसक हो जाये तो गोली चला दें।

स्वयंसेवकों ने अब एक अन्य युक्ति अपनाई। पच्चीस-पच्चीस सत्याग्रहियों के दल कांटेदार तारों के निकट बैठ गये। उन्होंने भीतर जाने का कोई प्रयत्न नहीं किया। तब भी पुलिस ने उन पर हमला किया। उनके घायल शरीर एक दूसरे के ऊपर गिर पड़े लेकिन इसी समय एक नये दल ने उनका स्थान ले लिया। उन्होंने पुलिस के पीटने का कोई विरोध नहीं किया।

पुलिस वाले तब लोगों को बाहों या टांगों से पकड़ कर घसीटने लगे। कुछ को पास के पानी से भरे नाले में फेंक दिया गया।

हर घंटे स्ट्रैचर उठाये लोग घायल और खून से तरबतर लोगों को उठा ले जाते और अस्थायी अस्पताल में रखते। वहां डाक्टर इतने सारे घायलों की पूरी देखरेख नहीं कर पा रहे थे। आखिर ब्रिटिश अफसर सरोजिनी नायडू के पास गया और उनका बाजू छू कर बोला, 'आप हमारी हिरासत में हैं।'

उन्होंने कहा, 'मैं तुम्हारे साथ चलती हूं मगर मुझे छुओ मत।'

जब सरोजिनी नायडू अफसर के पीछे-पीछे कांटोदार तारों के बाड़े की ओर चलीं जो उस समय जेल का काम कर रहा था तो भीड़ ने नारे लगाये। उसके बाद मणिलाल गाँधी को भी गिरफ़ार कर लिया गया।

स्वयंसेवकों ने दो दिन के लिये सत्याग्रह को रोक दिया ताकि नए

सत्याग्रही आ जाएं। लेकिन पुलिस और सेना ने धरसना आने वाली मुख्य सड़क को रोक दिया जिससे नये स्वयंसेवक वहां पहुंच ही न सकें।

यद्यपि नये स्वयंसेवकों को आने नहीं दिया जा रहा था, लेकिन जो सत्याग्रही वहां थे उन्होंने बार-बार नमक फैक्टरी में घुसने का प्रयत्न किया और ऐसा वे 6 जून तक करते रहे।

धरसना के बारे में लिखते हुए यंग इंडिया ने कहा, 'यह है भारत की सरकार—इसके दांत और पंजे खून से लाल हैं। यह अपनी लाठियां शान्त और निहत्थे लोगों पर बरसाती है...। सत्याग्रही नमक की ढेरियों में से नमक लाने में असफल रहे। उन्हें पीटा गया, घायल किया गया और गालियां दी गईं। उस समय उनकी आंशिक हार हुई क्योंकि कुछ लोग क्रूर व तगड़े लाठी चार्ज का सामना न कर सके।

'लेकिन जिन को लाठियां पड़ीं उन्होंने उन्हें प्रसन्नतापूर्वक सहा। उन्होंने पूरे संसार के सामने सरकार की पोल खोल दी, इसका आधार लोगों के प्रेम और उनकी अनुमति पर नहीं है लेकिन यह लोगों की इच्छा के विरुद्ध उन पर डंडे से शासन करती है।

'वे तभी तक भारत पर शासन कर सकते हैं जब तक लोग मजबूत और दृढ़ निश्चय होकर सब दुख सहने को तैयार नहीं हो जाते कि सरकार को हटा दें... कौन कहेगा कि सत्याग्रही हार गये? हम आशा करते हैं कि उनके दुख और सहनशीलता से तानाशाहों के हृदय में परिर्वतन होगा।'

इस आंदोलन का लक्ष्य केवल मुट्ठीभर नमक छीनना नहीं था बल्कि लोगों को बताना था कि ब्रिटिश शासन का आधार हिंसा और डंडा है और सरकार पर व्यवहारिक दृष्टि से दबाव डालना था।

गाँधी जी चाहते थे कि भारतियों का आत्म सम्मान बढ़े। वे यह दिखा दें कि वे ताकतवर ब्रिटिश सरकार को भी ललकार सकते हैं।

जैसे कि उन्होंने आशा की थी सरकार की दमन नीति से लोग झुकने के बजाये सत्याग्रह पर और दृढ़ हो गये। सारे देश में लोग या तो नमक बनाते या नमक कारखानों पर हमला करते। बम्बई के



निकट बड़ाला साल्ट वर्कस पर पन्द्रह हजार स्वयंसेवकों ने सत्याग्रह किया। कईयों को लाठियों से मारा गया और वे बुरी तरह घायल हो गये।

विदेशी कपड़े के बहिष्कार का प्रभाव इंग्लैंड का कपड़ा उद्योग महसूस करने लगा था। करीब न के बराबर कपड़ा भारत में बिक रहा था। लंकाशायर की कई मिलें बन्द पड़ी थीं।

कर न देने का आन्दोलन, विशेषकर गुजरात में, खूब फैल गया था। बारदोली, बोरसद और कम्बूसर के तालुकों में किसानों पर दमन चक्र चला क्योंकि उन्होंने लगान देने से इंकार कर दिया था। उनकी सम्पत्ति बहुत कम कीमत पर बेच दी गई। एक स्थान पर तो तीन हजार की सम्पति केवल पन्द्रह रुपये में बेची गई। जब वे सरकार का दमन और क्रूरता न सह सके तो करीब 80,000 लोग गुजरात से बड़ोदा रियासत में चले गये।

एक रिपोर्ट में कहा गया, 'घरों की लाइन की लाइन में ताले लगे हैं और उनकी खिड़कियों से खाली कमरे दिखाई देते हैं। गलियां मानो धूप की मौन झीलें हों।'

करीब एक लाख सत्याग्रही जिन में 17,000 औरतें थी जेलों में थे। अशान्ति और असन्तोष चारों ओर फैल गया था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अब छात्रों से स्कूलों और कॉलेजों का बहिष्कार करने के लिये कहा। उन्हें स्वतंत्रता के आन्दोलन में भाग लेने के लिये कहा गया। पंडित जवाहर लाल नेहरू ने जनता से आने वाली जनगणना का बहिष्कार करने के लिये कहा।

प्रशासन करीब-करीब ठप्प हो गया था। जिस वाइसराय ने गाँधीजी की चुटकी भर नमक से सरकार को परेशान कर देने की योजना की हंसी उड़ाई थी अब महसूस करने लगा था कि स्थिति पर उसका नियंत्रण न के बराबर है। चुटकी भर नमक गाड़ी भर बारूद से ज्यादा शक्तिशाली प्रमाणित हुआ था।

ब्रिटिश सरकार का झुकाव अब संधि-वार्ता की तरफ हो रहा था। उसने एक गोलमेज़ सम्मेलन आयोजित किया जिसका आरम्भ लन्दन में 12 नवम्बर 1930 को हुआ। लेकिन न तो उसमें महात्मा गाँधी थे और न ही कांग्रेस का कोई और नेता जिससे यह सम्मेलन अर्थहीन हो गया। सरकार ने उसे महसूस किया और ब्रिटिश प्रधान मन्त्री रैमजे मैक्डोनल्ड ने आशा व्यक्त की कि कांग्रेस अपने प्रतिनिधि द्वितीय गोलमेज़ सम्मेलन के लिये भेजेगी।

गाँधीजी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, मोतीलाल नेहरू और अन्य बीस से अधिक कांग्रेस नेताओं को 26 जनवरी 1931 को द्वितीय स्वतन्त्रता दिवस पर जेल से छोड़ दिया गया। गाँधीजी ने तत्काल वाइसराय को पत्र लिखा और भेंट करने के लिये समय माँगा।

लार्ड अर्विन इस बात से सहमत हो गये। दोनों में 17 फरवरी, 1931 को भेंट हुई। दोनों बराबरी के तौर पर मिले न कि शासक और प्रजा की तरह। यह ऐसे ही था कि एक राष्ट्र का प्रतिनिधि दूसरे राष्ट्र के प्रतिनिधि से मिल रहा हो। जब गाँधीजी वाइसराय हाऊस की सीढ़ियां चढ़े, वह समय इस देश के लिये एक ऐतिहासिक क्षण था। दुबली-पतली आकृति खादी पहने हुए राजसी ठाठ का मज़ाक उड़ा रही थी। वाइसराय इतने ऐश आराम में रहता था कि प्रिंस आफ वेल्स ने भारत की यात्रा के समय टिप्पणी की थी, 'जब तक मैंने भारत के वाइसराय को नहीं देखा था मेरी समझ में नहीं आया था कि एक राजा को कैसे रहना चाहिये।' गाँधीजी और लार्ड अर्विन की विषमता साफ थीं लेकिन बातचीत बड़े सौहार्द और सद्भाव के

वातावरण में हुई। इससे एक बार फिर स्पष्ट हो गया कि गाँधीजी अपने सत्याग्रह के अस्त्र से कितने सफल हुए हैं जिसमें प्रतिपक्षी से घृणा नहीं की जाती और न ही उसे कोई हानि पहुँचाई जाती है। वह तो केवल अपने विरोधी का हृदय प्रेम और अहिंसा से बदलना चाहते थे।'

एक रात, गाँधीजी ने वाइसराय के महल से अपने ठहरने के स्थान तक पैदल जाने का हठ किया। फासला करीब आठ किलोमीटर था। वाइसराय ने कहा, 'गाँधीजी, शुभरात्रि, मेरी प्रार्थना आपके साथ है।'

जाने के समय एक बार गाँधीजी अपना शाल भूल गये। लार्ड अर्विन ने शाल पकड़ाते हुए कहा, 'गाँधीजी, आपने इतना कुछ नहीं पहना हुआ कि आप इसे भी पीछे छोड़ जायें।'

एक मुलाकात के दौरान लार्ड अर्विन ने गाँधीजी से पूछा, कि क्या वह चाय पियेंगे। गाँधीजी ने वाइसराय को धन्यवाद करते हुए अपने शाल से कागज़ का एक लिफाफा निकाला और हंसते-हंसते कहा, 'मैं अपनी चाय में यह नमक डाल लूँगा जिससे हमें प्रसिद्ध बोस्टन की चाय पार्टी याद आ जाये।' दोनों व्यक्ति हंस पड़े।

जिसे गाँधी अर्विन पैक्ट या दिल्ली पैक्ट कहा जाता है, के अंतर्गत सविनय अवज्ञा आन्दोलन बन्द कर दिया गया। जो लोग कैद थे उन्हें छोड़ दिया गया और समुद्रतट पर नमक बनाने की अनुमति मिल गई। यह भी फैसला हुआ कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस लन्दन में हो रहे गोलमेज़ सम्मेलन में भाग लेगी।

इसमें स्वतन्त्रता या स्वतन्त्र उपनिवेश होने का कोई ज़िक्र नहीं था लेकिन गाँधीजी सन्तुष्ट थे क्योंकि इस आधार पर एक नया संबंध कायम हो रहा था। दोनों राजनीतिज्ञयों ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किये। ब्रिटेन और भारत के बीच बराबरी का सिद्धान्त स्थापित हो गया था।

समझौते पर हस्ताक्षर करने के पश्चात गाँधीजी ने भारतीय और विदेशी पत्रकारों को सम्बोधित किया और वाइसराय की प्रशंसा करते हुए कहा, 'मैं जानता हूँ कि मैंने कई बार ऐसे अवसर दिये होंगे



जिससे वाइसराय नाराज़ हो जायें या चिढ़ जायें लेकिन मुझे ऐसा कोई समय याद नहीं जब उन्होंने अधीरता या गुस्सा दिखाया हो।'

गाँधीजी ने यह भी कहा, 'स्वराज अभी मिला तो नहीं है मगर उसके लिये द्वार खुल गये हैं।'

उन्होंने बताया, 'हमारा ध्येय पूर्ण स्वराज है। भारत इससे कम में सन्तुष्ट नहीं होगा ... भारत बीमार बच्चा नहीं है कि उसे देखभाल, बाहरी मदद या बैसाखियों की आवश्यकता हो।'

अपने भाषणों और लेखों में गाँधीजी ने हिन्दु-मुसलमानों की एकता, पैक्ट की शर्तों का सख्ती से पालन, रचनात्मक कार्यक्रम में सक्रियता जिसमें विदेशी कपड़े का बहिष्कार और शराब की दुकानों पर पिकेटिंग भी शामिल थी, पर बल दिया।

उन्होंने समझौते की शर्तों को स्वीकार करने के कारण बताये।

'सत्याग्रही भय के आगे नहीं झुकता ... वह दूसरे पक्ष को नीचा दिखाने का प्रयत्न भी नहीं करता ... वह न्याय के रास्ते से नहीं हटता और न ही असंभव शर्तें रखता है। वह अपनी मांग न बहुत ऊंची और न ही नीची रखता है। मैं वर्तमान समझौते को स्वीकार करता हूँ जिसमें ये सब शर्तें पूरी होती हैं।'

'हम पूर्ण स्वतन्त्रता के सिवाय और कुछ नहीं मांगेंगे। यह हमें मिलेगी या नहीं एक दूसरी बात है।'

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने गाँधीजी को द्वितीय गोलमेज़ सम्मेलन में जाने के लिये अपना प्रतिनिधि चुना।

वह 29 अगस्त सन् 1931 को एस.एस. राजपूताना नामक जहाज़ द्वारा लन्दन के लिये रवाना हुए। जाने से पहले उन्होंने चेतावनी दी - हो सकता है वह बिलकुल खाली हाथ लौटें। उन्होंने कहा, 'जैसे हाथी चींटी की तरह नहीं सोच सकता, अच्छे इरादों के बावजूद अंग्रेज़ भी भारतीयों के लिये ऐसा सोचने के लिये असहाय हैं।'

गाँधीजी अकेले इंग्लैंड नहीं गये। उनके साथ पंडित मदन मोहन मालवीय, सरोजिनी नायडू, उनका सबसे छोटा लड़का देवदास, उनकी अंग्रेज़ शिष्या मैडलिन स्लेड, जिन्होंने साबरमती आश्रम में रहने के पश्चात अपना नाम मीरा बेन रख लिया था एवं उनके सेक्रेटरी भी थे।

सदा की तरह गाँधीजी सादा जीवन बिताना चाहते थे। उन्होंने आदेश दिया था कि वह और उनके साथी सबसे नीची श्रेणी में डेक यात्रियों की तरह यात्रा करेंगे। जब उन्हें पता चला कि उनके साथी कितना सामान साथ लाये हैं तो उन्होंने सात ट्रंक और सूटकेस अदन से वापस भेज दिये। बम्बई के बाद जहाज़ पहली बार अदन में ही ठहरा था।

गाँधीजी के अनुयायी उनकी बकरी भी साथ ले गए क्योंकि बकरी का दूध उनके भोजन का आवश्यक अंग था। जहाज़ पर गाँधीजी अधिक समय डेक पर कातते, लिखते, प्रार्थना करते एवं अन्य यात्रियों से बातें करते या उनके बच्चों के साथ खेलते।

वह लन्दन 12 सितम्बर को पहुँच गये। ब्रिटिश लोग गाँधीजी को खादी पहने, डंडा लिए, अपनी बकरी और अनुयायिओं के साथ जहाज़ से उतरते देख, विस्मित हो गये। उन्हें इस बात पर आश्चर्य हो रहा था कि ऐसा फकीर-सा व्यक्ति उनके प्रधानमन्त्री से बात करने आया है।

समाचारपत्रों में 'भारत के मिकी माउस' के कार्टून और ढेर सारे फोटो भी निकले। जहां भी गाँधीजी जाते, पत्रकार उनका पीछा

करते। इससे पहले उन्होंने ऐसा नेता नहीं देखा था, ऐसा आदमी जिसे बड़ा बनने के लिये सरकार की शक्ति नहीं चाहिये थी। उनकी सरकारी तौर या औपचारिक रूप से कोई स्थिति नहीं थी लेकिन फिर भी लोगों ने स्वेच्छा से और अन्धभक्तों की तरह उनके कहने पर जेलें भर दी थीं। दुख और पीड़ा, यहां तक कि मृत्यु से भी वे नहीं डरे थे।

गाँधीजी कुमारी मूरियल लेस्टर, जिन्होंने सन् 1926 में उनके दर्शन किये थे, के यहां किंग्सले हाल में ठहरे थे। यह स्थान ईस्ट एंड में है जहां गरीब लोग रहते हैं।

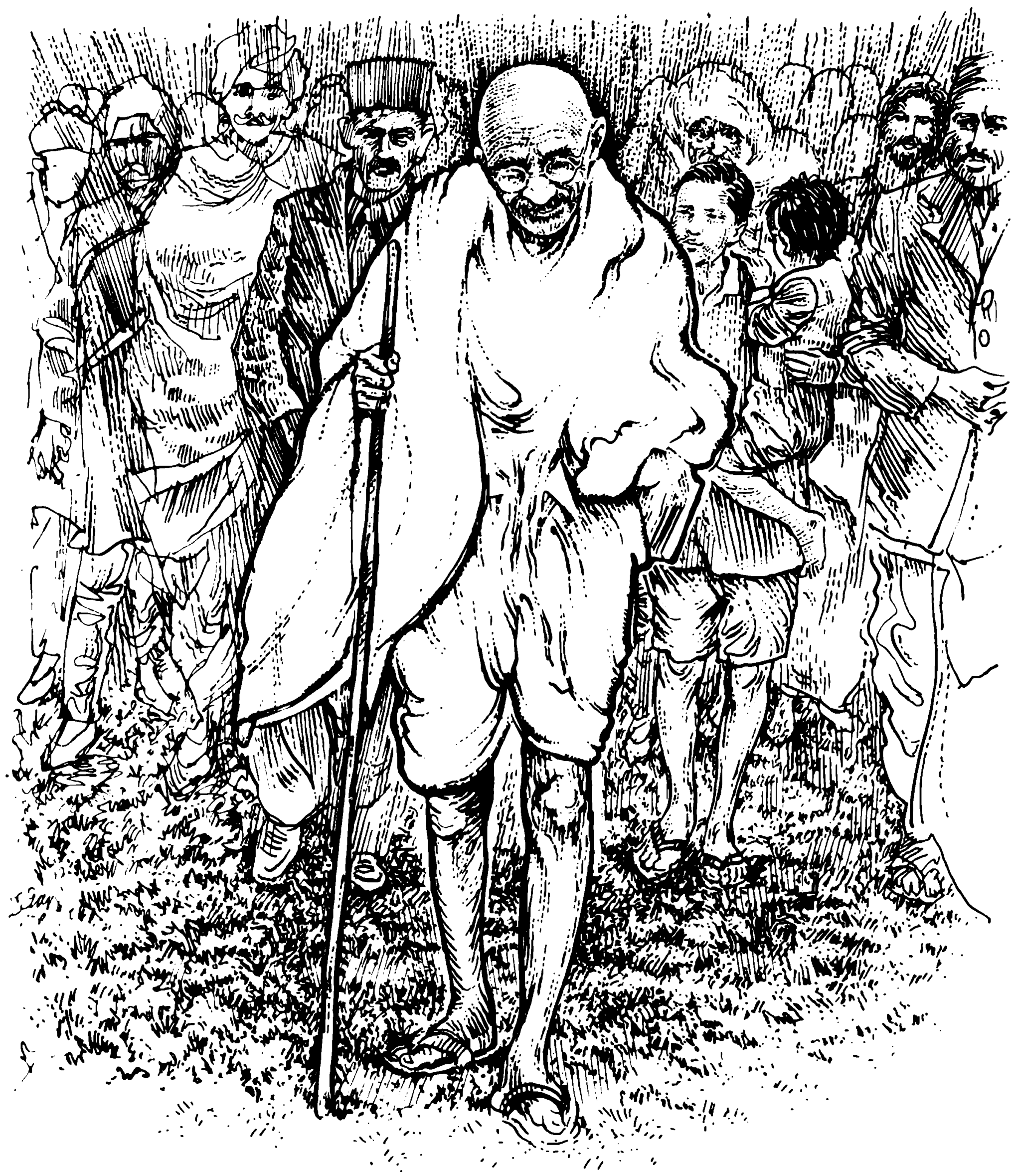
यह स्थान सेंट जेम्स पैलेस से, जहां गोलमेज़ सम्मेलन हो रहा था, तथा शहर के मध्य भाग से 8 किलोमीटर दूर था। उनके दोस्तों ने सलाह दी कि यदि वह किसी निकट के होटल में ठहर जायें तो सोने और काम करने के लिये कई घंटे बच जायेंगे। लेकिन वह इतना पैसा अपने आराम पर खर्च नहीं करना चाहते थे। न ही वह अपने अमीर अंग्रेज़ या हिन्दुस्तानी दोस्तों के पास रहना चाहते थे। उन्होंने कहा कि उन्हें अपनी तरह के गरीब लोगों में रहना अच्छा लगता है। वह केवल इस बात से सहमत हुए कि 88 नाइटसब्रिज में एक छोटा सा आफिस खोल लें जिससे जो उनसे भेंट करना चाहते हैं, उन्हें इतनी दूर ईस्ट एंड की गन्दी बस्ती में न आना पड़े।

सुबह के समय गाँधीजी गन्दी बस्ती की गलियों में पैदल जाते और पुरुष व महिलायें मुस्करा कर उनका अभिवादन करते। गाँधीजी उनसे बातें करते और कइयों के घर भी गये। बच्चे उनको घेर लेते। एक ने शैतानी से पूछा, 'अरे गाँधी, तुम्हारी पतलून कहां है?' गाँधीजी हंसने लगे और बच्चे भी हंस पड़े।

ब्रिटेन के युद्धकालीन प्रधानमन्त्री लायड जॉर्ज ने उन्हें अपने फार्म पर निमन्त्रित किया। उन्होंने वहां तीन घंटे बिताये।

हंसोड़ अभिनेता चार्ली चैपलिन उनसे मिलना चाहता था। गाँधीजी ने कभी फिल्म नहीं देखी थी और उन्हें अभिनेताओं में कोई रुचि नहीं थी। लेकिन यह जानने पर कि चैपलिन ईस्ट एंड के एक गरीब परिवार में जन्मा था, वह उससे मिल कर प्रसन्न हुए।

अन्य प्रसिद्ध व्यक्ति जो उनसे मिले, उनमें जनरल स्मट्स, मारिया



मौंटेसरी और जॉर्ज बनार्ड शा भी थे। लार्ड अर्विन का गाँधीजी के भारत से चलने से पहले ही तबादला हो गया था। उनके स्थान पर लार्ड विलिंगडन वाइसराय बन कर आये थे। वह भी गाँधीजी से मिले।

गाँधीजी ने कई स्कूल देखे और लन्दन, कैम्ब्रिज और आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय भी देखने गये। वह लंकाशायर जाकर कपड़ा मजदूरों से मिले, जो भारत में विदेशी कपड़े के बहिष्कार के कारण अब खाली बैठे थे। गाँधीजी ने बताया कि किस कारण उन्हें बहिष्कार करना पड़ा। उन्होंने इतने आत्मविश्वास और नम्रता और सीधे मन से बात की कि उन लोगों ने, जिन्हें उनके कारण खाली बैठना पड़ा था, गाँधीजी का स्वागत किया। उन्होंने गाँधीजी से कहा कि वे उनके स्थान पर होते तो वैसा ही करते। यह अंग्रेज़ लोगों के बड़प्पन और न्यायप्रियता का चिह्न था कि वे दूसरे पक्ष का दृष्टिकोण समझते थे चाहे इसमें स्वयं उन्हें कितना दुख झेलना पड़ रहा था।

सम्राट जार्ज पंचम को गोलमेज सम्मेलन के प्रतिनिधियों को दिए जाने वाले स्वागत-समारोह में गाँधीजी को शामिल करने में हिचक हो रही थी। यह भोज बकिंघम पैलेस में होना था।

जब भारत के सेक्रेटरी आफ स्टेट सेम्युल होर ने सम्राट से कहा कि हम गाँधीजी का नाम इस भोज में आने वाले लोगों की लिस्ट में से निकाल नहीं सकते, तो सम्राट ने कहा, 'क्या ऐसे विद्रोही फकीर को महल में बुलाऊं जो मेरे वफादार अफसरों पर हुए सारे आक्रमणों के पीछे रहा है?'

'जी, ऐसा ही करना होगा। उसे निमन्त्रित न करना भारी गलती होगी, महामहिम,' सर सैम्युल ने उत्तर दिया।

तब बादशाह ने कहा कि वह एक ऐसे आदमी को राजमहल में आमंत्रित नहीं कर सकते जो ठीक से कपड़े नहीं पहनता।

सर सैम्युल ने कहा, 'महामहिम सम्राट, आप नहीं, वह सर्दी महसूस करेगा। इसलिये चिन्ता कैसी?'

महात्मा गाँधी को निमंत्रण मिला और वह अपनी खादी की धोती और शाल में ही बकिंघम पैलेस गये। भोज के अन्त में सम्राट ने

कहा, 'मिस्टर गाँधी, याद रखिये, मैं अपने साम्राज्य पर आक्रमण नहीं सहूंगा।'

गाँधीजी ने नम्रता से कहा, 'मैं इस समय आपके महल में राजनीति पर बहस नहीं करना चाहता, जहां मैंने अभी आपका आतिथ्य स्वीकार किया है।'

बाद में संवाददाताओं द्वारा पूछने पर कि क्या उनको बकिंघम पैलेस में ठंड नहीं लगी, तो गांधीजी ने हंस कर कहा, 'नहीं, महामहिम ने हम दोनों के लिये काफी कपड़े पहन रखे थे।'

गाँधीजी इस समय ब्रिटिश जनता की नज़रों में भारत के उद्देश्य को उचित और न्यायसंगत प्रमाणित करने की ओर अधिक ध्यान दे रहे थे। उनका ध्यान गोलमेज़ सम्मेलन की ओर इतना नहीं था। उन्होंने कुछ श्रोताओं से कहा, 'मुझे लगता है कि मेरा काम सम्मेलन से बाहर है। मेरे लिये यही असली गोलमेज़ सम्मेलन है। जो बीज मैं इस समय बो रहा हूं, हो सकता है उसके कारण ब्रिटिश लोगों का रवैया हमारी तरफ नरम पड़ जाये... जिससे मनुष्यों के प्रति निष्ठुरता न बरती जाये।'

गाँधीजी ने लेक्चर, भाषण, प्रेस के साथ इन्टरव्यू आदि दिये। यात्रा पर गये, लोगों से मिले और ढेरों पत्रों के उत्तर दिये। इन सब कामों के कारण वे दिन के 21 घंटे व्यस्त रहते जिससे केवल तीन घंटे सोने के लिये बचते। उनका ध्येय था ब्रिटिश लोगों और संसार को विश्वास दिलाना कि भारत को स्वाधीनता मिलनी ही चाहिये। उसे इस की उतनी ही ज़रूरत है जितनी किसी अन्य देश को। इस दौरान उनके कई दोस्त बन गये और कइयों को भारत के उद्देश्य से सहानुभूति हो गई।

उन्होंने एक रेडियो भाषण में अमरीकी लोगों से कहा कि संसार का ध्यान भारत की ओर आकर्षित हुआ है। क्योंकि स्वतन्त्रता पाने के लिये हमने जिस रास्ते को अपनाया है वह अनोखा है... आज तक दूसरे राष्ट्र बर्बरों की तरह लड़े हैं। उन्होंने अपने शत्रुओं से बदला लिया है... भारत में हमने इस प्रक्रिया को उल्टा करने का प्रयत्न किया है। यदि ज़रूरत हुई तो मैं युगों तक प्रतीक्षा करने को

